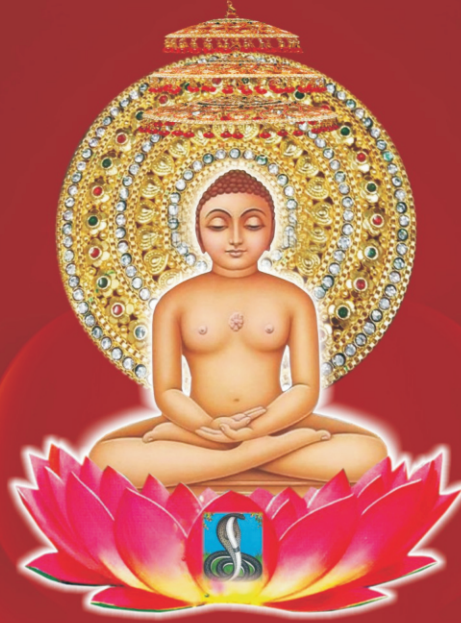




उपसर्ग विनाशक, रोग शोक नाशक, राहु-केतु योग निवारक, ऋद्धि सिद्धि प्रदायी
श्रीमद्देवेन्द्र कीर्ति प्रणीत

कल्याण मंदिर स्तोत्र

प्रवाचक : जीवन है पानी की बूँद भजन के 3500 छंदों के रचयिता व प्रणेता

उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

उपसर्ग विनाशक, रोग शोक नाशक, राहु-केतु योग निवारक, ऋद्धि सिद्धि प्रदायी

श्रीमद्देवेन्द्रकीर्ति प्रणीत

कल्याण मंदिर स्तोत्र

प्रवाचक

जीवन है पानी की बूँद भजन के 3500 छंदों के रचयिता व प्रणेता

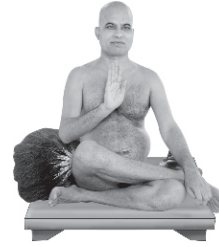
उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

कृति— उपसर्ग विनाशक, रोग शोक नाशक, राहु-केतु योग निवारक, क्रद्धि सिद्धि प्रदायी
श्रीमद्देवेन्द्रकीर्ति प्रणीत

कल्याण मंदिर स्तोत्र

- मूल रचयिता - श्रीमद्देवेन्द्र कीर्ति (आचार्य कुमुदचन्द्र)
शुभाशीष - प.पू. सूरिंगच्छाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महामुनिराज
प्रवाचक/पद्यानुवाद - उच्चारणाचार्य विनम्रसागर
पावन प्रसंग - उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज के
दसवें आचार्य पदारोहण दिवस के उपलक्ष्य में
प्रथमावृत्ति - 5000, आगरा (उ.प्र.) सन् 2020
प्राप्ति स्थान - * धर्म प्रभावना (ट्रस्ट) न्यास, भिण्ड (म.प्र.) मो. 09826801542
* समता तीर्थ धाम, सीपुर (राज.) मो. 09828613614
* देवेन्द्र जैन, बीना (म.प्र.) मो. 07580223344
* निर्ग्रन्थ श्रमण सेवा समिति, भिण्ड (म.प्र.) 09425127061

मुद्रक : ज्योति ग्राफिक्स, जयपुर मो. 8290526049, 8619727900



गणाचार्य 108 श्री विरागसागर जी महामुनिराज

‘आशीर्वाद’

ॐ

कल्याणमंदिर होना - प.पू. आचार्य श्री
कुमुदचन्द्र देव द्वारा लिखित है। बलवं
जलज में अगवान पाईनाथ हुनौ है।
जो सुगम सरल और अर्थपूर्ण होने पर
श्री अनेकों मंत्र, मंत्र एवं घंटों से सुक
अभिवाद्यों से सुक है।
अति एक आदर है। फिर जब वह
अगवान नाम व गुणों से सुक जागे है। वह
वह अवस्था ही कहें हारी एवं सुख -
प्रदयी हो जागे है।
अमृताचार्य श्री विनम्रसागर जी ने
उन होना का पद्यानुवाद - अनुवाद
नया और आवा में प्रस्तुत हो है।
वह निश्चय ही वर्तमान प्रेक्षकों
युवा वर्ग के हित में रचकर होगी।
मेरा कहे तथा उनके इस कार्य के हित
‘आशीर्वाद’।

जैनमः

7/11/21 25/5/21

विनम्र देशना (अगवान को ब्रह्म)

प्रवाचक की कलम से



भक्ति की अभिव्यक्ति में सर्वशक्तियाँ समाहित हैं, विनम्रता की सीढ़ी पर ज्ञान के ठोस कदमों की चाप से मंजिल के रास्ते को भक्ति ही सहजता व सरलता से तय करती है। सैद्धांतिक व आध्यात्मिक ज्ञान, नय व न्याययुक्त भी हो और शुद्धचर्या से युक्त भी होने पर यदि सच्ची हार्दिक भक्ति नहीं होगी तो ऐसा शुद्ध ज्ञान और चारित्र भी मोक्ष के द्वार के कपाट नहीं खोल सकता है यह कहना अनुचित नहीं होगा कि ज्ञान व चारित्र में भक्ति की श्रेष्ठता सर्वोत्तम है। यह सच्ची भक्ति ही सम्यक्त्व का मुख्य कारण है इस भक्ति में सच्चे देव-शास्त्र-गुरु पर श्रद्धान् करना, आत्मानुभव करना, दर्शन मोहनीय का उपशम-क्षय-क्षयोपशम, कषायों पर उपशमन, अहंकार का विनाश, विनम्रता का होना, ये सभी गर्भित हैं। भक्ति सर्वांगीण है। यह स्तोत्र भक्ति के चरमोत्कर्ष विचारों को उत्पन्न करने में श्रेष्ठ स्थान रखता है। भक्ति का रसायनमयी अमृत जिसने

पिया है वह स्व-रूप होने के साथ प्रशस्त रहते हुए स्वयं के स्वभाव में अलमस्त भी रहेगा।

हम अपने जीवन में राहु-केतु ग्रहों से दुःखी रहते हैं जिसे अन्य लोग कालसर्प योग कहते हैं, हमेशा बीमारियों से पीड़ित हैं, दुर्घटनाओं से व्यथित हैं, असफलताओं के कारण हताश हैं, परिवार में बहुत ही त्रसित हैं, कई संकटों से घिरे हुए हैं तो आप यह कल्याण मंदिर स्तोत्र का प्रतिदिन शुद्ध उच्चारण में मंत्रोच्चार सहित पाठ दीप जलाकर करिये एवं 108 दिन तक संकल्पपूर्वक विधान करिये जिसमें लोंग व फल चढ़ाइये जिससे आपको शीघ्र ही इन परेशानियों से मुक्ति मिलना-संभव है।

ऋद्धिमंत्रों से सहित भक्ति सरोवर इस कल्याण मंदिर स्तोत्र की शुद्धतापूर्वक सचित्र प्रस्तुति ज्ञानसरोवर के राजहंस, भव्यजनों की श्रद्धा के हिमालय मम हृदय कमल सम्राट सूरिगच्छाचार्य परम पूज्य गुरुदेव श्री विरागसागर जी महामुनिराज के परम आशीर्वाद से पूर्ण हुई है उनके द्वय चरणों में त्रयभक्तियुत् विनम्र नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।

—आचार्य विनम्रसागर



नाम	: रतनस्वरूप जैन (नवरत्न)
पिता का नाम	: पं. श्री मेरचन्द जी जैन (समाधिस्थ मुनि 108 विश्वकीर्तिसागर जी)
माता का नाम	: श्रीमती चमेलीदेवी जैन
जन्म तिथि	: 01 अक्टूबर 1963, भिण्ड
शिक्षा	: एम.कॉम. (डिस्ट्रिक्ट टॉप) 8 वर्ष सर्विस
ऐलक दीक्षा	: 09/08/1992, द्रोणगिरि
मुनि दीक्षा	: 08/06/2003, ललितपुर
आचार्य पदारोहण	: 12/12/2010, बाँसवाड़ा (राज.)
रुचि	: काव्य रचना, वैज्ञानिक, सैद्धान्तिक, मनोवैज्ञानिक खोज चिंतन, लेखन व गहन तर्कशैलीलता
दीक्षा गुरु	: गणाचार्य श्री विरागसागर जी गुरुदेव

बचपन से ही तीक्ष्ण बुद्धि के धारक एम.कॉम की परीक्षा जिले में प्रथम स्थान विशेष योग्यता के साथ प्राप्त की। आठ वर्ष तक शिक्षक पद पर रहे, प्रोफेसर बनना तय हो गया था। ICS और CA एवं PSC की तैयारी हो चुकी थी तभी आचार्य विरागसागर जी महाराज को पाकर वैराग्य हो गया। आपके मामाजी कलेक्टर, प्रोफेसर, जीजाजी अनुसंधान अधिकारी दिल्ली, चाचाजी बैंक मैनेजर, डॉक्टर हैं। भिण्ड जिले से लगभग 50 लोग मुनि हुए हैं उनमें सबसे ज्यादा लौकिक शिक्षा में आप ही पारंगत हुए। गुरुवर श्री में हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत और ज्योतिष, हस्तरेखा आदि का ज्ञान समाविष्ट है।

आचार्य श्री ने आचार्य श्री से धवल जी, जयधवल जी, महाधवल जी, सिद्धांत, आगम-अध्यात्म, न्याय, नय, संस्कृत व प्राकृत व्याकरण एवं चारों अनुयोगों का विशेष अध्ययन किया है। शब्द विज्ञान के धनी व काव्य रचना में महाकवि हैं, जिन्होंने “जीवन है पानी की बूँद” पर 3500 छंद लिखे हैं जो सारे भारत में गूँज रहे हैं, “कितना प्यारा तेरा दुआरा”, “धीरे-धीरे चलो जी मंदिर”, “चेतन पिंजरे वाली ना”, “कर ले आतम ध्यान बाबा”, “मेरा जीवन कोरा कागज” एवं कई देश भक्ति के गीतों को धर्ममय बना दिया। आचार्यश्री ने लगभग 1000 कविताएँ, 500 भजन, 350 गजलें (उर्दू में) 2000 मुक्तक, 1500 पहेलियाँ, 2000 English Quotation लिखे हैं तथा भक्तामर स्तोत्र को दस तरह से एवं कई स्तोत्रों का पद्यानुवाद करके अपने चिंतनों की पराकाष्ठा, विलक्षण काव्यशैली और अध्यात्म की उच्चतम संवेदना की अभिव्यक्ति का परिचय दिया है।

लगभग 40 पुस्तकों की रचना करके जन-जन को कई तरीकों से धर्मज्ञान को सामने रखा है। English में Philosophy of Karma, Moral Science for children Part I, II, III, What is truth, Know your future एवं What is Life ये पुस्तकें आज की युवा पीढ़ी के लिये उपयोगी सिद्ध हैं। णमोकार महामंत्र व उसकी महिमा को अंग्रेजी में इस ढंग से सरल भाषा में लिखा है जिसे णमोकार मंत्र की तरह गा भी सकते हैं और अर्थ भी बहुत सरल है। ऐसा णमोकार मंत्र जैन जगत में पहली बार लिखा गया है।

आचार्य श्री तेरापंथ और बीसपंथ के विवादित झंझटों से दूर सिर्फ निर्ग्रन्थता के पोषक हैं। प्रवचन शैली सबसे निराली, आवाज में गीत-संगीत है, सिद्धांत और आध्यात्मिक बात को न्यायिक ढंग से स्पष्ट करने में माहिर, कभी भी विरोधाभास-आलोचनात्मक वचनों को नहीं बोलना, सरलता-सौम्यता, विद्वत्ता, विनम्रता से युक्त आगमानुकूल चर्या एवं सभी रूढ़िवादिताओं व हठाग्रह से दूर, तर्क में ओशों से भी गंभीर तेज और इतना होते हुए भी महाकवि-हर छंद पर कविताएँ, गजल एवं भजनादि लिखने व गाने की क्षमतायें सभी एक साथ एक व्यक्ति में होना आश्चर्य ही नहीं बहुत बड़ा चमत्कार है।

ऐसे सूरज, चाँद की तरह ज्योतिर्मय गुरुवर श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज के चरणों में श्रद्धा सहित विनम्र नमोऽस्तु-नमोऽस्तु-नमोऽस्तु।

वर्षायोग समिति-2018, भिण्ड

णमोकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आयरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सव्व साहूणं

**एसो पंच णमोयारो सव्वपावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवई मंगलम्।**

I bow to all Arihantas.

I bow to all Siddhas.

I bow to all Acharyas.

I bow to all Upadhyayas.

I bow to all Saints in the world.

This Namokar Mantra, about to destroy all sins.
and the first is auspicious in the all auspicious.



संयुक्त अक्षर को दो बार उच्चारण जैसा बोलते हैं यही स्वराघात है। दीर्घ स्वर, अनुस्वार व विसर्ग आने पर स्वराघात नहीं होता है।

* ए ऐ ओ औ, ये दीर्घ हैं लेकिन संध्यक्षर भी हैं। ये दोनों दो स्वरों से मिलकर बने हैं। अ+इ=ए, अ+ए=ऐ, अ+उ=ओ, अ+औ=औ। इन सभी में दो स्वर हैं इसलिए ये हमेशा दीर्घ ही होते हैं।

* वर्णमाला में 14 स्वर और 33 व्यंजन होते हैं। 14 स्वर में 5 ह्रस्व और 9 दीर्घ होते हैं 33 व्यंजन में 20 घोष होते हैं और (कख, चछ, तथ, टठ, पफ, श, ष, स) ये तेरह अघोष होते हैं जो अक्षर मुँह से बाहर आते हैं वे स्वर सहित व जो मुँह के अन्दर ध्वनित होते हैं उन्हें हलन्त अक्षर या व्यंजन कहते हैं।

* ए और ओ के बाद कहीं-कहीं (S) चिह्न लगा होता है इसका मतलब 'अ' है किसी भी अक्षर के ऊपर अनुस्वार लगा हो तो उसे ङ् ञ् ण् न् म् इनमें से कोई एक अक्षर में उच्चारित करते हैं।

पाँच वर्ग होते हैं-कण्ठोच्चारित-कवर्ग-क ख ग घ ङ

मूर्धोच्चारित - ट वर्ग - ट ठ ड ढ ण

ओष्ठोच्चारित - प वर्ग - प फ ब भ म

ताल्वोच्चारित - च वर्ग - च छ ज झ ञ

दन्त्योच्चारित - त वर्ग - त थ द ध न

अन्योच्चारित - य र ल व श ष ह संयुक्त अक्षर क्ष त्र ज्ञ

* किसी भी शब्द के अनुस्वार के बाद जिस वर्ग का अक्षर आता है तो अनुस्वार, उसी वर्ग का अंतिम अक्षर हो जाता है। जैसे-गंगा, इसमें अनुस्वार को ङ् बोलेंगे यदि झंडा हो तो झण्डा, पंथ= पन्थ, पंप-पम्प, गंजा-गञ्जा आदि।

* गंगा में अनुस्वार के बाद गा है और गा क वर्ग का है इसलिये अनुस्वार ङ् होगा, झंडा में डा है ड ट वर्ग का है ट वर्ग का अन्तिम अक्षर ण है अतः ण् होगा आदि।

* शब्द के अन्तिम अक्षर पर अनुस्वार हो तो म् पढ़ा जाता है जैसे ज्ञानं, ध्यानं, मानं।

* स के पूर्व अनुस्वार को न, श य के पूर्व ञ्, ह के पूर्व ङ् और ष के पूर्व ण् पढ़ते हैं।

* श ष स तीनों का उच्चारण अलग-अलग है जब जीभ मूर्धा से घिसटते हुए ड की तरह आती है तब ष होता है, जब जीभ की नोंक ऊपर के दाँत की जड़ के ऊपर लगती है तब श होता है और जब जीभ को ऊपर के दाँत के पिछले हिस्से से लगाकर बोला जाये तो स होता है। विसर्ग का उच्चारण हलन्त ह की तरह होता है।

अभीप्सित कार्य सिद्धिदायक

कल्याणमंदिर – मुदार – मवद्यभेदि,
भीताभय प्रद – मनिंदित – मंघ्रि पद्मम्।
संसार सागर निमज्ज – दशेषजन्तु,
पोतायमान-मभिनम्य जिनेश्वरस्य॥१॥

अन्वयार्थ

कल्याणमंदिरं=कल्याणों का मन्दिर (स्थान), उदारं= नाना सुखों के प्रदाता, अवद्यभेदि= अवद्यों (पापों) का भेदन करने वाले, अनिन्दितं=प्रशंसनीय, भीताभयप्रदं= संसार व दुःखों से भयभीत प्राणियों को अभयदान (जीवनदान) देने वाले, संसार सागर निमज्जदशेष जन्तु पोतायमानं= चारों गतियों में भ्रमण रूप संसारसमुद्र में डूबे हुए सब प्राणियों को निकालने के लिए नौका के समान, जिनेश्वरस्य= जिनेन्द्र भगवान के, अंघ्रिपद्मं= चरणाविंद को, अभिनम्य= नमस्कार करके (स्तुति करूँगा)

भावार्थ

हे भगवन्! सर्वसुखदाता, पाप विनाशक, इन्द्रों से प्रशंसनीय, पूज्य अभयप्रदाता संसार में डूबे प्राणियों को जो सहारे हैं उन पार्श्व प्रभु को नमन हमारे हैं।

अंग्रेजी

O God! Provider of all kinds of pleasures, revered by indras, giver of fearlessness, who is anchor of the drowning people in the worldly sea, i bow down before you Parshavnathji!

ॐ ह्रीं भवसमुद्रपतज्जन्तु तारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो इट्ठकज्जसिद्धि पराणं जिणाणं
(इष्ट कार्य सिद्धि प्रदाता जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो भगवते अभीप्सितकार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

पद्यानुवाद

कल्याणों का धाम यही, स्तोत्र बताएँ रे SS
पार्श्व प्रभू को हो-3, हम शीश झुकाएँ रे SSS
कल्याणों के मंदिर हैं, दर्शन ज्ञान समंदर हैं
पापों को जो खंजर हैंSSS
भवसागर में डूब रहे-उनको जहाज प्रभुवर हैं
पारस प्रभु नमकर हो-3, जयकार लगाओ रे-S

कल्याणों के महान मंदिर, करते सारे पाप विनष्ट,
अभय शुभम् पद दे भव्यों को, भव भय दूर करें सब कष्ट।
भवि जीवों को पोत समा हैं, जिनवर के द्वय चरण कमल,
अति आसक्त भक्ति में होकर, नमूँ करूँ परिणाम विमल।

कल्याणों के धाम है पार्श्वनाथ भगवान।

उन प्रभुवर को मैं सदा, करूँ “विनम्र” प्रणाम॥
उपसर्गों को जीतकर, पाया केवलज्ञान।

पार्श्वनाथ जिनदेव को, लाखों बार प्रणाम॥

नाना सुख के दाता हो तुम, अभय प्रदाता त्राता हो तुम।
हो उदार सब पाप विनाशक, भव्यजनों को साता हो तुम॥
जो भव सागर डूबने वाले, उनको पार लगाने वाले।
हैं कल्याण के मंदिर धाम, पार्श्व प्रभु को करूँ प्रणाम॥

अभीप्सित कार्य सिद्धिदायक

यस्य स्वयं सुरगुरु - गरिमाम्बुराशेः,
स्तोत्रं सुविस्तृत-मति न विभु विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य कमठ - स्मय-धूमकेतोस्-
तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये॥२॥

अन्वयार्थ

गरिमाम्बुराशेः = गौरव के समुद्र, यस्य = जिन पार्श्वनाथ की, स्तोत्रं = स्तुति, विधातुं = करने के लिए, स्वयं = खुद, सुविस्तृतमतिः = विस्तृत (विशाल) बुद्धि वाले, सुरगुरुः = बृहस्पति भी, विभु = समर्थ, न = नहीं हैं, कमठस्मय = कमठ के जीव, धूमकेतोः = (शंबरनामक ज्योतिषी देव) के मान को भस्म करने के लिए अग्नि स्वरूप, तस्य तीर्थेश्वरस्य = उन पार्श्वनाथ तीर्थकर का, किल = निश्चय से, एष अहं = यह मैं, संस्तवनं = स्तवनं, करिष्ये = करूँगा।

भावार्थ

जिनकी स्तुति करने में विशाल बुद्धि वाले सुरगुरु भी समर्थ नहीं हैं, कमठ के मान को भस्म करने वाले उन पार्श्वनाथ भगवान् का मैं स्तवन करूँगा।

अंग्रेजी

Even the great intellectuals find themselves incapable in praising you, O Lord Parshavanath! Who calcined the pride of Kamath. I'll eulogize such a great Lord.

बुद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दक्खकराणं ओहि जिणाणं।
(द्रव्यकारण अवधिज्ञानी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो भगवते अभीप्सितकार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

पद्यानुवाद

सुरगुरु ने भी गाया है- फिर भी पार न पाया है-2
गुण समुद्र सी काया हैSSS

मान कमठ का चूर किया, अग्नि समा प्रभु छाया है-2
ऐसे प्रभु पारस हो-3, की स्तुति गायेँ रे-SS

महागुणी प्रभु! गरिमा सागर! चिन्मय पार्श्वनाथ भगवान्,
मान कमठ का भस्म करने को, अग्नि समा है जिनका ध्यान।
सुरगुरु जिनकी थुति गाने में सक्षम नहीं, करे बहुमान,
अचरज है हम अल्पबुद्धि से, करते हैं उनके गुणगान॥

जिनकी बुद्धि विशाल बताई, सुरगुरु नाम जगत में भाई,
नहिं समर्थ तव गुणगाने में, बात ये गुरुवर ने बतलाई।
मान कमठ का दूर किया था, निज को गुण से पूर्ण किया था,
उन प्रभु का गुणगान करूँगा, जिनका पारस नाम लिया था।

ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर संहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

जल भय निवारक

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-
मस्मादृशः कथ-मधीश! भवन्त्यधीशाः?
धृष्टोऽपि कौशिक-शिशु-र्यदि वा दिवान्धो,
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः?॥३॥

अन्वयार्थ

अधीश! = हे स्वामिन्!, सामान्यतः = सामान्य (साधारण) रीत से, अपि तव
= भी तुम्हारे, स्वरूपं = स्वरूप का (वास्तविक गुणपर्यायों का), वर्णयितुं
= कथन करने के लिए, अस्मादृशः = हमारे जैसे अज्ञप्राणी, कथं अधीशाः
= कैसे समर्थ, भवन्ति = हो सकते हैं? अल्प बुद्धि नहीं हो सकते, यदि वा =
अथवा यह कहना ठीक ही है, किल घर्मरश्मेः रूपं = निश्चय से सूर्य के
स्वरूप का, दिवान्धः = दिन में अन्धा रहने वाला अर्थात् जिनको सूर्य के
प्रकाश में दिखता नहीं है ऐसा, कौशिक शिशुः = उल्लू का बच्चा, धृष्टोऽपि

भावार्थ

हे भगवन्! ज्ञानहीन, ज्ञान का विवेचन कैसे कर सकते हैं? वैसे ही दिन में
अंधा उल्लू, सूरज का विवेचन कैसे कर सकता है? नहीं कर सकता।

अंग्रेजी

O God! How can an ignorant discriminate knowledge?
Likewise how a blind owl can discriminate the Sun? Not
possible.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो समुद्रभय सामण बुद्धीणं परमोहि जिणाणं।
(समुद्रभय नाश के लिए परमावधि ज्ञानधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ भगवत्यै पद्म निवासिन्यै नमः स्वाहा।

पद्यानुवाद

उल्लू रवि को बतलाए, दिन में अंधा हो जाए-2
जाने बिन क्या समझाए-SSS
वैसे ही अज्ञानी मैं, कैसे तव स्वरूप गायें-2
भक्ति से अंधा हो-3, आँखें पा जाये रे-SSS

हे स्वामिन्! तुम गुण वारिधि हो, कैसे हम कह सकते गुण,
अल्पबुद्धि है मुझमें जब वह, वृहस्पति कहने नहीं निपुण।
जैसे उल्लू सूर्य किरण का, वर्णन करे, कहे विद्वान्,
वैसे धृष्ट हुआ थुति करने, पूर्ण न कर सकता गुणगान॥

मैं हूँ मंदबुद्धि का धारक, तुम प्रभु सप्तभयों के नाशक।
कैसे हम गावें गुणगान? तुम महान हो परम विधायक॥
वह उलूक का बच्चा आये, सबको सूरज गुण बतलाए।
यह उसका मूरखपन भाई, वह कैसे वर्णन कर पाये॥

ॐ ह्रीं चिद्रूपाय क्लीं महाबीजाक्षार सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

असमय निधन निवारक

मोह क्षया - दनुभवन्नपि नाथ! मर्त्यो,
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत।
कल्पान्तवान्त पयसः प्रकटोऽपि यस्मान्,
मीयेत केन जलधे-र्ननु रत्नराशिः?॥४॥

अन्वयार्थ

नाथ! = हे स्वामिन्, मोहक्षयात् = मोहनीय कर्म का क्षय हो जाने पर, अनुभवन् अपि = आपके गुणों का अनुभव करता हुआ भी, मर्त्यः = मानव (मनुष्य), नूनं तव = निश्चय से आपके, गुणान् = गुणों को, गणयितुं = गिनने के लिए, न क्षमेत = समर्थ नहीं है यस्मात् = क्योंकि, कल्पान्तवान्त पयसः = प्रलयकाल के समय बाहर कर दिया जाता है जल जिसको ऐसे, जलनिधेः = समुद्र की, प्रकटः = प्रकट हुई रत्नराशिः अपि = रत्नों की राशि भी, ननु केन = किसी पुरुष के द्वारा, मीयेत = गिनी जा सकती है? अर्थात् किसी के द्वारा नहीं।

भावार्थ

हे प्रभु! जैसे समुद्र में दृष्टिगोचर रत्नों को गिनना संभव नहीं है वैसे ही आपके अनंतगुणों को मोही मानव द्वारा गिनना संभव नहीं है।

अंग्रेजी

Hey God! As it is impossible to count the visible gems in the sea (ocean), similarly, it is impossible for human beings to count your eternal infinite qualities.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अकालमिच्चुवारयाणं सच्चोहि जिणाणं।
(अकाल मृत्यु निवारण के लिए सर्वावधि ज्ञानधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो भगवते ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं नमः स्वाहा।

पद्यानुवाद

सागर में बहु रत्न भरे, गिनती उनकी कौन करे-2
कोई नहीं समर्थ दिखे-SSS

वैसे प्रभु के अनंत गुण, गिन नहीं सके महान निपुण-2
ऐसे प्रभु के गुण हो-3, गाये गुण पाये रे-SSS

मिथ्यामल क्षय होने पर भी, कौन आप गिन सकता गुण,
नहीं समर्थ मनुष है कोई, निश्चय से नहीं कोड़ निपुण।
प्रलयकाल में पानी के बिन, सागर में रह जाते रत्न,
कोड़ नहीं गिन सकता उनको, चाहे कितने करे प्रयत्न॥

जिसने मोह मिटाया सारा, निज अनुभव पाया निज प्यारा।
उत्तरे भी नहीं गुण गिन पाये, हे प्रभु तुम गुणमय भण्डारा॥
प्रलयकाल मरु जब चल जाये, पानी निकल सभी बह जाये।
सागर में तब रत्न दिखें पर, कोई उनको गिन नहीं पाये॥

मोहनीय कर्मादि का, नष्ट कर दिया नाम।

उन प्रभु पार्श्व जिनेश को, करूँ “विनम्र” प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अनन्तगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

प्रच्छन्न धन प्रदर्शक

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ! जडाशयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लस-दसंख्य गुणाकरस्य।
बालोऽपि किं न निज बाहु युगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः?॥५॥

अन्वयार्थ

नाथ! = हे स्वामिन्, जडाशयः = जड़बुद्धि वाला अज्ञानी (मैं), अपि = भी, लसदसंख्यगुणाकरस्य = शोभित उत्तम असंख्यात गुणों की खानि स्वरूप, तव स्तवं = तुम्हारा स्तवन, कर्तुं = करने के लिए, अभ्युद्यतोऽस्मि = तत्पर हुआ हूँ। ठीक ही है।, बालःअपि = बालक भी, स्वधिया = अपनी बुद्धि के अनुसार, निजबाहुयुगं = अपने दोनों हाथों को, वितत्य = फैलाकर, अम्बुराशेः = समुद्र की, विस्तीर्णतां = विस्तार को, किं = क्या, न कथयति = नहीं कहता है? अर्थात् कहता है।

भावार्थ

हे भगवन्! जैसे बालक अपनी बुद्धि से हाथों को फैलाकर समुद्र का विस्तार बताता है। वैसे ही अज्ञानी मैं आपके गुणों का अल्पबुद्धि से विस्तार कर रहा हूँ।

अंग्रेजी

O God! Like a child spreading his hands with his innocent intellect to tell the expanse of the sea, in the same manner, I, the ignorant, am expanding your properties with a little bit of my intellect.



ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो गोधण बुद्धिदकराणं अणंतोहि जिणाणं।
(गोधन वृद्धि हेतु अनंतावधि ज्ञानधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ पद्मिने नमः।

पद्यानुवाद

हाथों को जो फैलाए, सागर सीमा बतलाए-2

बालक बुद्ध कहलाए-SSS

वैसे ही मैं मूर्ख यहाँ, गुण गाने तैयार यहाँ-2

ऐसे ही भाव-हो-3, निज ज्ञान बढ़ाएँ रे-SS

मंदबुद्धि होकर भी तेरे, गुण अनंत मैं बता रहा,
हे स्वामिन्! भक्ती वश तेरी, थुति हो तत्पर, जता रहा।
क्या लघु बालक अल्पबुद्धि से करता नहीं जलधि विस्तार,
द्वय हाथों को विस्तृत करके, शक्ति बिना कहता आकाश॥

फैलाकर द्वय हाथ दिखाये, शिशु समुद्र विस्तार बताए।
शक्तिहीन फिर भी बतलाए, यह अबोधना ही कहलाए॥
वैसे ही प्रभु गुण के सागर! गुण अनंत के प्रभुवर गागर।
मैं अल्पज्ञ कहूँ गुण कैसे? उद्यत हूँ मैं कहने आकर॥

ॐ ह्रीं परमोन्नतगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।



सन्तान सम्पत्ति प्रसाधक

ये योगिना-मपि न यान्ति गुणास्तवेशः।
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः।
जाता तदेव - मसमीक्षित कारितेयं,
जल्पन्ति वा निज गिरा ननु पक्षिणोऽपि॥६॥

अन्वयार्थ

ईश! = हे स्वामिन् तव = आपके, ये गुणाः = जो गुण हैं वे, योगिनां अपि = योगिश्वरों को भी, वक्तुं न यान्ति = कथन में नहीं आते हैं, तेषु मम = उन गुणों के कथन में मेरी, अवकाशः कथं = सामर्थ्यता कैसे, भवति = हो सकती है, अर्थात् मैं उन्हें कैसे वर्णन कर सकता हूँ, तत् एव = इसलिए ही हे देव! इस प्रकार, इयं = यह मेरी स्तुति करने की प्रवृत्ति, असमीक्षितकारिता जाता = बिना विचारे काम करता हुआ, जाता वा = हुई है अथवा, ननु = निश्चय से, पक्षिणः अपि = पक्षीगण भी, निजगिरा = स्वकीय वाणी से, जल्पन्ति = बोलते हैं। उसी प्रकार मैं भी बोलता हूँ।

भावार्थ

हे भगवन्! जैसे पक्षीगण बिना विचारे अपनी वाणी से कुछ भी बोलते रहते हैं वैसे ही मैं बिना विचारे उन जिनदेव का कथन कर रहा हूँ जिनका कथन करने में बड़े-बड़े योगीजन भी समर्थ नहीं हैं।

अंग्रेजी

O God! Like the birds go on chirping out of their pleasure with their own voices, in the same manner out of my internal pleasure i keep on speaking without giving any thought, even the yogis are not capable speaking in that manner.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं गमो पुत्तइत्थि करणं कोट्ठ बुद्धीणं।
(पुत्र स्त्री प्राप्ति हेतु कोष्ठ बुद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो भगवते ह्रीं श्रीं ब्रां ब्रीं क्षां क्षीं प्रीं ह्रीं नमः (स्वाहा)

पद्यानुवाद

बिना विचारे बोले जो, पक्षी सा अज्ञानी हो-2
कैसे प्रभु गुण गाये वो-SSS

योगी गुण नहीं गा पायें, हम कैसे गा सकते वो
फिर भी गुण गाये-हो-3, धर्मी बतलाएँ रे-SS

बड़े-बड़े ऋषि और तपस्वी, सक्षम नहीं गाने गुणगान,
हे प्रभु! हम कैसे गा सकते, कितना तुझमें दर्शन ज्ञान।
मेरे द्वारा किया गया यह तव स्तवन सुख का आधार,
परिणति अपनी दर्शाई है, लेकिन लगती बिना विचार॥

गुण अनंत की प्रभुवर खान, कोइ न कर पाये गुणगान।
योगेश्वर भी थक-थक हारे, पा न सके वे भी विश्राम॥
भूल गया मैं अपनी शक्ति, प्रकट कर रहा फिर भी भक्ति।
बिना विचारे थुति की मैंने, पुण्य दायिनी मेरी प्रवृत्ति॥

ॐ ह्रीं अगम्यगुणाय क्लीं महाबीजाक्षार सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

अभीप्सित जनाकर्षक

आस्ता-मचिन्त्य महिमा जिन! संस्तवस्ते,
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति।
तीव्रातपोपहत पान्थ - जनान्निदाघे-
प्रीणाति पद्म सरसः स रसोऽनिलोऽपि॥७॥

अन्वयार्थ

जिन! = हे जिनेश्वर देव!, अचिन्त्यमहिमा ते = अचिन्त्य महिमा वाले आपका, संस्तवः = स्तोत्र तो आस्तां=दूर रहे, भवतः नामापि = आपके नाम का उच्चारण भी, जगन्ति भवतः = संसारी प्राणियों को संसार से, पाति = रक्षा करता है अर्थात् संसार दुःखों से बचाता है क्योंकि, निदाघे = ग्रीष्मकाल में, पद्मसरसः = कमलों से व्याप्त तालाब की, स रसः = जलकणों से युक्त, अनिलः अपि = वायु भी, तीव्रातपोपहत पांथजनान् = तीव्रआतप से व्याकुल राहगीरों को, प्रीणाति = संतुष्ट करती है उनके तीव्रताप को दूर कर सुखी करती है।

भावार्थ

हे प्रभु! कमलों से भरे तालाब की सुगंधित हवा संताप हरती है वैसे ही अचिन्त्य महिमायुक्त आपका स्तोत्र तो दूर आपका नाम ही सबका संताप हरता है।

अंग्रेजी

O God! Like the cold wind blowing over the pond filled with lotus flowers gives pleasure, likewise the eulogizing you is a way to give pleasure to the creatures.

क्रद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अभिट्ठसाधयाणं बीजबुद्धीणां।
(अभीष्ट प्राप्ति हेतु बीज बुद्धि धारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो भगवते शुभाशुभं कथयित्रे स्वाहा।

पद्यानुवाद

करते पथ में पथिक गमन, गर्मी में हो तीव्र तपन-2
तुष्ट कराए शीत पवन-SSS
छोड़ो थुति जब नाम यहाँ, कर देता भवशाम यहाँ-2
पारस की महिमा-हो-3, अद्भुत बतलाएँ रे-SS

हे प्रभु! दूर रहे थुति तेरी, नाश करे दुख केवलनाम,
महिमा भक्ति अचिन्त्य तुम्हारी, शीतलता देना, यह काम।
ग्रीष्मऋतु में कमल युक्त सर, सुखदायी जो पीड़ित धाम,
पर उनकी शीतल वायु भी, देती मनु को सुख स्नान॥

ग्रीष्मकाल में आग बरसती, राहगीर को पीड़ा करती।
पद्माकर ही नहीं सुखदायी, ठंडी लहरें सुखमय लगतीं॥
वैसे ही प्रभु दुःख विनाशक, पावन गुणमय हैं शिवदायक।
बहुत दूर है थुति की बात, नाम तुम्हारा है सुखदायक॥

ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

कुपितोपदंश विनाशक

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो! शिथिली भवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्म बन्धाः।
सद्यो भुजंगम-मया इव मध्य भाग-
मभ्यागते वन-शिखंडिनि चन्दनस्य॥८॥

अन्वयार्थ

विभो! = हे भगवन्!, त्वयि=तेरे, हृद्वर्तिनि = हृदय में आ जाने पर, जन्तोः = प्राणियों के, निबिडा = सघन कठोर, अपि = भी, कर्मबन्धाः = कर्मबन्धन, क्षणेन = क्षण भर में, शिथिलीभवन्ति = शिथिल हो जाते हैं, इव = जैसे, वनशिखण्डिनि = मयूर के, चन्दनस्य = चन्दन के, मध्यभाग = मध्यभाग में, अभ्यागते = आ जाने पर, भुजंगममया = सर्पों की कुण्डलियाँ, सद्यः = शीघ्र ही शिथिल हो जाती हैं।

भावार्थ

हे भगवन्! जैसे चंदन के पेड़ पर लिपटे साँप के बंधन मयूर आते ही ढीले पड़ जाते हैं वैसे ही आपके हृदय में आते ही कर्मबंधन ढीले पड़ जाते हैं।

अंग्रेजी

O God! Like snakes coiling round the sandalwood trees lose their grip on coming of peacocks, in the way karmas get diminished as soon as you enthrone in our hearts.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं गमो उण्हगदहारीणं पदानुसारीणं।

(भुजंग भय नाश हेतु पदानुसारी ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो भगवते मम सर्वांगपीडा शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

पद्यानुवाद

मोर जहाँ पर आते हैं-साँप वहाँ घबराते हैं-2
बंधन खुद खुल जाते हैं-SSS

प्रभु जब हृदय समाते हैं-कर्मबंध मिट जाते हैं-2
प्रभु को जो ध्याये-हो-3, चिंतामणि पाये रे-S

हे जिन! जिसके उर तुम रहते, वह पावन हो निर्बन्धन,
क्षणभर में सब सघनकर्म के, तोड़े वह अपने बंधन।
चंदन तरु पर, कुण्डल के सम, लिपटे सर्प महाविकराल,
मिलती जब आवाज गरुड़ की, बंधन ढीले दिखता काल।

हे प्रभु! तुम जिस उर में आये, उसके उर में रत्न दिखाए।
कर्मबंध ढीले पड़ जाते, क्षण में यह घटना घट जाए।
चंदन तरु को अहि लिपटाए, कोई जिसको हटा न पाए।
लेकिन मोर अगर आ जाए, तो बंधन ढीले पड़ जाएँ।

उर से ध्याया नाम लें, पार्श्वनाथ भगवान्।

कर्मबंध ढीले पड़ें, करूँ “विनम्र” प्रणाम।

ॐ ह्रीं कर्मबन्धविनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षार सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

सर्प वृश्चिक विषनाशक

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र!
रौद्रै-रुपद्रव-शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।
गो-स्वामिनि स्फुरित-तेजसि दृष्टमात्रे,
चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः॥१॥

अन्वयार्थ

जिनेन्द्र!= हे जिनेन्द्रदेव!, इव = जैसे, स्फुरित तेजसि = प्रकट है तेज जिसका ऐसे पराक्रमी, गोस्वामिनि = गायों के मालिक के (राजा के), दृष्टमात्रे = दिखते ही, प्रपलायमानैः चौरैः = भागते हुए चोरों के द्वारा, पशवः = पशु, आशु= शीघ्र ही, मुच्यन्तः = छूट जाते हैं, इव=उसी प्रकार हे भगवन्, त्वयि = आपको, वीक्षिते = देख लेने पर, अपि=भी, मनुजाः = मानवों के, रौद्रैः उपद्रव शतैः = भयंकर सैकड़ों उपद्रवों के द्वारा, सहसा = शीघ्र, मुच्यन्तः = छूट जाते हैं।

भावार्थ

हे प्रभु! जैसे मालिक को देखकर चोर भाग जाते हैं, गाय मुक्त हो जाती हैं उसी प्रकार आपको देखते ही आर्तरीद्र सभी उपद्रवों से आत्मा मुक्त हो जाती है।

अंग्रेजी

O God! As, on seeing the householder, the thief runs away the cows free, in the same way seeing you the soul gets free from all the worldly nuisances.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विसहरविसविणासयाणं संभिण्ण सोदाराणं।
(विषधर विष विनाशन हेतु संभिन्न सोतु ऋद्धि धारक जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवन हूं स्वाहा।

पद्यानुवाद

मालिक ज्यों ही नजराए-चोर स्वयं ही घबराए-2
गाय छोड़कर भग जाए-SS

वैसे ही प्रभु दर्शन से-सभी उपद्रव मिट जाए-2
जिनवर का दर्शन हो-3, सब ही दिखलाए रे-SS

तेजस्वी नृप देख चोर सब, माल छोड़ भग जाते हैं,
हे प्रभु! हाहाकार मचाते, अपने प्राण बचाते हैं।
वैसे भवि जो दर्शन करते, सभी उपद्रव हों निष्प्राण,
तेरा दर्शन महा शक्तिमय, अघ रक्षा करते निज प्राण॥

शतक उपद्रव कण फैलाए, मानव देखे घबरा जाएँ।
ज्यों ही प्रभु का दर्शन होता, दुःख से खुद मानव बच जाएँ॥
चोर चुराकर गायें लाए, मालिक चोर पकड़ने आए।
लेकिन यह मालिक दिख जाए, चोर छोड़ गायें भग जाएँ॥

ॐ ह्रीं दृष्टोपवर्गविनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपाश्वर्नाथाय अर्घ्यम्।

तस्कर भय विनाशक

त्वं तारको जिन! कथं भविनां त एव,
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।
यद्वा दृतिस्तरति यज्-जलमेष नून-
मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः॥10॥

अन्वयार्थ

जिन!= हे जिनेन्द्र देव, त्वं =आप, भविनां तारकः = संसारी प्राणियों को तारने वाले, कथं= कैसे हो सकते हो, यत्=क्योंकि, ते एव = वे संसारी प्राणी ही, त्वां हृदयेन = आपको हृदय में, उद्वहन्ति = धारण करते हुए, उत्तरन्तः=संसार समुद्र से पार हो जाते हैं, यद्वा = संसारी प्राणी ही तुमको तिराकर जाते हैं ठीक है, यत् =जो, दृति जलं = चर्म पात्र जल में, तरति = तिरता है, किल = सत्य, वास्तव में, नूनं सः एषः = निश्चय से वह यह, तस्यः अन्तर्गतस्य = उस मशक के अन्दर, मरुतः अनुभावः = वायु का ही

भावार्थ

हे प्रभु! जैसे मशक में हवा के प्रभाव से लोग पानी में तैरकर पार हो जाते हैं वैसे ही हृदय में आपके प्रभाव से लोग संसार से पार हो जाते हैं।

अंग्रेजी

O God! As the people swim across the water using waterskin owing to the air filled in it, likewise having you in the heart, people get through this world.



ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तक्खर भय पणासयाणं उज्जुमदीणं।
(तस्कर भय नाशन के लिए ऋजुमति मनःपर्यय ज्ञानधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ ह्रीं भगवत्यै गुणवत्यै नमः स्वाहा।

पद्यानुवाद

मसक न पार कराती है-हवा पार करवाती है-2
बात समझ ये आती है-SS
पार कराते प्रभू हमें-या हम पार कराते हैं-2
दिल में प्रभु बैठे-हो-3, भव पार कराएँ रे-SS

मशक भरी वायु तो वह भी, डूब न सागर पाती है,
सागर में रह करके भाई, वारिधि से तिर जाती है।
हे प्रभु आप भरे जिस उर में, वह भव डूब न पाता है,
तारन हारे तुम हो लेकिन मनु भव में तिर जाता है॥

जो भवि तुमको उर में धरता, वह ही प्राणी भव में तिरता।
तेरा ही प्रभाव है भगवन, शिव रमणी वह प्राणी वरता॥
मशक पानी से भरी हुई है, पानी में वह पड़ी हुई है।
तिरती जाती नहीं डूबती, यह प्रभाव वायु का ही है॥

ॐ ह्रीं सुध्येयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।



जलाग्नि भयविनाशक

यस्मिन् हर - प्रभृतयोऽपि हत-प्रभावाः,
सोऽपि त्वया रति-पतिः क्षपितः क्षणेन।
विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन,
पीतं न किं तदपि दुर्द्धर-वाडवेन?॥11॥

अन्वयार्थ

यस्मिन् = जिस कामदेव के विषय में, हरप्रभृतयः अपि = शिव, ब्रह्मा, विष्णु आदि भी, हतप्रभावाः = प्रभाव रहित हो गये अर्थात् काम के अधीन हो गये, सः = वह, रतिपतिः अपि त्वया = कामदेव भी तुम्हारे द्वारा, क्षणेन = एक क्षणभर में, क्षपितः = नष्ट कर दिया गया, सो अथ = ठीक ही है क्योंकि, येन पयसा हुतभुजः = जिस पानी के द्वारा अग्नि, विध्यापितः = बुझाई जाती है, किं तत् अपि = क्या वह जल भी, दुर्द्धर वाडवेन न = दुर्द्धर बड़वानल के द्वारा नहीं, पीतं = पिया जाता है? अग्नि क्या पानी का शोषण नहीं करती है? अपितु करती ही है।

भावार्थ

हे भगवन्! जो पानी अग्नि बुझाता है उसी पानी को बड़वानल की आग भस्म कर देती है वैसे ही जिस कामदेव ने तीनों लोक जीत लिया उसी को आपने क्षण में ही भस्म कर दिया।

अंग्रेजी

Oh God! The water that generally blows out the fire, but the same water is incinerated by the fire in the ocean (Badvanala). Similarly, the same cupid who won the three-folk, is incinerated by you in a moment.



क्रद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वारियालण बुद्धीणं विउलमदीणं।
(अग्निभय नाश के लिए विपुलमति मनःपर्यय ज्ञानधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ सरस्वत्यै गुणवत्यै नमः स्वाहा।

पद्यानुवाद

जल, अग्नि को नाश करे, बड़वानल जल नाश करे-2

जल के दो दो काम अरे-SSS

काम मिटाए रागी को, मिटता गर वैरागी हो-2

प्रभुवर ने क्षण में हो-3, सब काम मिटाए रे-SS

हरि-हर ब्रह्मा आदि सभी जन, हार गए जब आया काम,
हे प्रभु! तुमने ब्रह्मशक्ति से, किया काम का काम तमाम।
जिस जल ने विंध्याचल गिरि की, अग्नि बुझाई सच ये बात,
बड़वानल की आग बुझाने, उस जल में क्या शक्ति बिसात॥

ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर हारे, ऐसे सुभट काम के मारे।
तुमने कामदेव वह जीता, जिसने सब पर पाँव पसारे॥
जिस पानी से आग बुझाते, वह ही बड़वानल पी जाते।
दोनों शक्ति हमारे अन्दर, जिसको प्रकट करें कर जाते॥

ॐ ह्रीं अनङ्गमथनाय क्लीं महाबीजाक्षार सहिताय श्रीपाश्र्वनाथाय अर्घ्यम्।



अग्निभय विनाशक

स्वामिन्-ननल्प गरिमाण-मपि प्रपन्नास्,
त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यतिलाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः॥12॥

अन्वयार्थ

स्वामिन् = हे जिनेन्द्र भगवन्!, अहो = आश्चर्य है कि, अनल्पगरिमाणं = अत्यधिक गौरव से युक्त विरोध पक्ष में वजनदार, त्वां प्रपन्नाः = तुमको प्राप्त, हृदये = हृदय में, दधानाः = धारण करने वाले, जन्तवः = संसारी प्राणी, जन्मोदधिं = संसार समुद्र को, अपि = भी, अतिलाघवेन = अति लघुता हल्केपन से, कथं = कैसे, लघु = शीघ्र ही, तरन्ति = तिर जाते हैं, यदि वा = अथवा, हंत = हर्ष है कि, महतां = महापुरुषों का, प्रभावः = प्रभाव, चिन्त्यः न = चिंतवन करने योग्य नहीं है, अर्थात् अचिन्त्य है।

भावार्थ

हे भगवन्! अनंतगुणों के भार से युक्त आपको हृदय में पाकर संसारी प्राणी हल्कापन महसूस करता हुआ शीघ्र ही तिर जाता है सो ठीक है महापुरुषों का प्रभाव अचिन्त्यनीय है।

अंग्रेजी

O God! Having you, the holder or infinite virtues, in his heart, the worldly creature feeling light attain emancipation, it is right. The influence of the great men is unknowable.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणलभय वज्जयाणं दसपुच्चीणं।
(अग्निभयनाशन हेतु दसपूर्वधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो (भगवत्यै) चण्डिकायै नमः स्वाहा।

पद्यानुवाद

दर्श ज्ञान से भारी हैं, हृदय धरें संसारी हैं-2
प्रभु सबको उपकारी हैं-SSS

तुम्हें हृदय धर जाते जो, कैसे झट तिर जाते वो-2
प्रभुवर की महिमा हो-3, नहीं चिन्त्य बताएँ रे-SS

जिनका था गौरव अति जग में, वो भी हुए समर्पित आप,
हे प्रभु! अचरज भारी, तुमको, उर में धरे, तजे वह पाप।
महापुरुष भी चिंतन करते, तुम्हें नहीं उर पाते हैं,
चिंतन से भी दूर प्रभु तुम, महिमा ऋषि बताते हैं॥

जिसने तुम्हें हृदय में ध्याया, गुण-गौरव को उसने पाया।
इतना हल्का वह हो जाता, तिरने वाली उसकी काया॥
अचरज की यह बात बताई, महाज्ञानियों में यह पाई।
ध्याते वो कैसे तिर जाते? चिंतन कर सकते नहीं भाई॥

जिनका ध्यान अचिन्त्य है, निर्विकल्प विश्राम।

ऐसे पार्श्व जिनेश को, करूँ “विनम्र” प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अतिशयगुरवे क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

जल मिष्ट कारक

क्रोधस्त्वया यदि विभो! प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदा वद कथं किल कर्म-चौराः।
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके,
नील-द्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी?॥13॥

अन्वयार्थ

विभो! = हे भगवन्, यदि त्वया = आपके द्वारा, क्रोधः प्रथमं = क्रोध को पहले ही, निरस्तः = नष्ट कर दिया जाता, तदा = तो फिर, वद = कहिये कि आपने, कर्मचौराः = कर्म रूपी चोरों को, कथं ध्वस्ताः = कैसे नाश किया?, किल = यह मुझे आश्चर्य हो रहा है, यदि वा = अथवा ठीक ही है, अमुत्र लोके = इस लोक में, शिशिरा अपि = ठण्डी होने पर भी, हिमानी किं = बर्फ क्या, नीलद्रुमाणि = नीले वृक्ष वाले, विपिनानि = वन को, न = नहीं, प्लोषति = जलाती है? अर्थात् जलाती है।

भावार्थ

हे प्रभु! लू से ही पेड़ नहीं जलते ठंडी ओस (पाला) पड़ने से भी नीले फूल जल जाते हैं वैसे ही क्रोध से ही कर्म नहीं कटते। ठंडे क्रोध (क्षमा) से भी कर्मों का नाश किया जाता है।

अंग्रेजी

Oh Lord! Not the sunstroke only burns the trees, but cold waves also burn the blue flowers. Karmas are do away not only with anger, but with cold forgiveness also.

क्राद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो रिक्खभय वज्जयाणं चोद्दसपुव्वीणं।
(चौदह पूर्वधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो भगवत्यै चामुण्डायै नमः स्वाहा।

पद्यानुवाद

क्रोध खत्म कर, मारा है, कर्मों को निरवारा है-2
बिना क्रोध फटकारा है-SS
बर्फ यहाँ पड़ जाती है-हरियाली जल जाती है
ठंडी अग्नि से हो-3, जंगल जल जाए रे-SSS

हे भगवन्! तुम क्रोध रहित थे, कैसे पाई अरि पर जय,
क्रोध बिना इस भव में प्राणी, कैसे पाता कभी विजय।
बर्फ पड़े जब भारी तब तक, हरे भरे जल जाते हैं,
वैसे क्षमा ठंड सी अग्नि, कर्म सभी मिट जाते हैं॥

अगर पूर्व में क्रोध मिटाया, तो फिर कैसे कर्म नशाया।
अचरज यह हमको लगता है, हे प्रभु! यह कैसे हो पाया॥
तरु को केवल आग जलाती, बात नहीं यह समझ में आती
शीत बर्फ भी पेड़ जलाती, बात यही प्रभु में नजराती॥

ॐ ह्रीं जितक्रोधाय क्लीं महाबीजाक्षार सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

शत्रु स्नेह जनक

त्वां योगिनो जिन! सदा परमात्मरूप-
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज कोष देशे।
पूतस्य निर्मल रुचे-र्यदि वा किमन्य-
दक्षस्य संभव-पदं ननु कर्णिकायाः॥१४॥

अन्वयार्थ

जिन! = हे जिनेन्द्र, योगिनः = योगीजन सदा निरन्तर, परमात्मरूपं = परमात्मा स्वरूप, त्वां = आपको, हृदयाम्बुज कोषदेशे = हृदय रूपी कमल के मध्य में, मन्वेषयन्ति = खोजते हैं, यदि वा = ठीक ही है, पूतस्य = पवित्र, निर्मलरुचेः = निर्मल कान्ति वाले, अक्षस्य ननु = कमल बीजों का निश्चय से, सम्भवपदं = उत्पत्ति स्थान, कर्णिकायाः = कर्णिका के, अन्यत् = बिना, वा किं = क्या दूसरा और हो सकता है।

भावार्थ

हे स्वामिन्! पवित्र निर्मल कांतियुक्त कमल का बीज कमल कर्णिका में ही पैदा होता है वैसे ही निर्मल पवित्र परमात्मा हृदयकमल की कर्णिका से ही पैदा होता है। इसीलिए योगीजन हृदयकमल पर ध्यान करते हैं।

अंग्रेजी

Hey Master! The seeds of pure nectarous lotus are produced in the lotus serum (chord). Similarly, the pure holy spirit is born in the heart (hridaykhand). The is why Yogis (ascetics) meditate through their heart.

क्रद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो भंसणभय झवणाणं अट्ठंग महाणिमित्त कुसलाणां।
(शत्रु भय नाश के लिए अष्टांग महानिमित्तधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो भगवते अभीप्सितकार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

पद्यानुवाद

हृदय कमल पर ध्याते हैं, वे उर में प्रभु पाते हैं-2
निर्मल भाव बनाते हैं-SSS

सबसे सुंदर हृदय कमल, यही जगह प्रभु की निर्मल-2
दिल में प्रभु ध्याये हो-3, वो कर्म मिटाए रे-SS

हे स्वामिन्! ध्यानी योगीश्वर! तुमको खोजे हृदय कमल,
उर में ही राजित रहता है, शुद्धातम चैतन्य विमल।
महा सरोवर में खिलते हैं, सुरभित सुन्दर बहुत कमल,
लेकिन बीज, कमल कणिका में, होता है यह बात अटल॥

योगीजन नित तुमको ध्यायें, पावन निर्मल ध्यान लगायें।
नहीं खोजते मंदिर-मस्जिद, अपने उर में तुमको पायें॥
हे प्रभु! तेरी परम सुवास, हृदय कमल में निर्मल वास।
अन्य जगह नहीं तेरी कोई, ऐसा हमको है विश्वास॥

ॐ ह्रीं महन्मृग्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्ष्वनाथाय अर्घ्यम्।

चोरी गत द्रव्य दायक

ध्यानाज्-जिनेश! भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्म-दशां व्रजन्ति।
तीव्रानला-दुपल-भाव-मपास्य लोके,
चामीकरत्व-मचिरादिव धातु भेदाः॥15॥

अन्वयार्थ

जिनेश! = हे जिनेन्द्र भगवान्!, भवतः ध्यानात् = आपके ध्यान से, भविनः = संसारी प्राणी, क्षणेन = एक क्षण में, देहं = शरीर को, विहाय = छोड़कर, परमात्मदशां = परमात्म अवस्था को, व्रजन्ति = प्राप्त होते हैं, इव लोके = जैसे लोक में, तीव्रानलात् = तीव्र अग्नि के सम्बन्ध में, धातुभेदाः = धातु युक्त पाषाण भेद, उपलभावं = स्वकीय पाषाण पर्याय को, अपास्य = छोड़कर, अचिरात् = शीघ्र ही, चामीकरत्वं = सुवर्ण पर्याय को, व्रजन्ति = प्राप्त हो जाता है।

भावार्थ

हे भगवन्! धातु सहित पाषाण अग्नि के संयोग से शीघ्र ही स्वर्णता को प्राप्त हो जाता है वैसे ही संसारी प्राणी आपके ध्यान से शरीर छोड़कर परमात्मा बन जाता है।

अंग्रेजी

O God! Metallic rock combines with fire soon turns into gold, in the same manner the worldly creature, diverting its attention from the body, through meditation become God!

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खर धणप्पयाणं विउव्वणपत्ताणं।
(अक्षय धन प्राप्ति हेतु विक्रिया ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो गंधारि (रयै?) नमः श्रीं क्लीं ऐं ब्लूं हूं स्वाहा।

पद्यानुवाद

पत्थर को जब अग्नि मिले, तभी शुद्धमय स्वर्ण खिले-2

ऐसा कहते लोग भले-SSS

ध्यान दीप जब हृदय जले, उसको तन में प्रभु मिले-2

क्षण में ही ध्यानी-हो-3, प्रभु पद पा जाये रे-SS

महा अग्नि से पत्थर जलकर, राख शीघ्र हो जाता है,
हे प्रभु! अपनी पर्यय तजकर, दूजी पर्यय पाता है।
वैसे ही भवि प्राणी करते, अग्निमयी जब तेरा ध्यान,
क्षण भर में पर्याय छोड़कर, पा लेते परमात्म धाम॥

जो प्रभु करता तेरा ध्यान, करता तन से वही प्रयाण।
वह परमात्म अवस्था पाता, बन जाता वह खुद भगवान्॥
पाषाणों में स्वर्ण मिला हो, अग्नि का संयोग हुआ हो।
तो वह स्वर्ण शुद्ध हो जाता, स्वर्ण वही जो अलग हुआ हो॥

ॐ ह्रीं कर्मकिट्टुदहनाय क्लीं महाबीजाक्षर संहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

गहन वन पर्वत भय विनाशक

अन्तः सदैव जिन! यस्य विभाव्यसे त्वं,
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्?
एतत् स्वरूप-मथ मध्य-विवर्तिनो हि,
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः॥16॥

अन्वयार्थ

जिन = हे जिनेश्वर देव! भव्यैः = भव्य प्राणियों के द्वारा, यस्य = जिस शरीर के, अन्तः त्वं = मध्य में आप, सदैव = निरंतर, विभाव्यसे = ध्यान किए जाते हैं, तत् शरीरं अपि = उस शरीर को भी आप, कथं नाशयसे = कैसे नष्ट कर देते हैं, अथ = अथवा, मध्यविवर्तिनः = मध्यस्थ, एतत्स्वरूपं = यह स्वभाव ही है अर्थात् यह वस्तु का स्वरूप ही है, यत् = कि, महानुभावाः = महापुरुष, विग्रहं = कलह (शरीर) को, प्रशमयन्ति = नाश करते हैं। (दूसरे पक्ष में 'विग्रह' शरीर के राग-द्वेष नाश कर देते हैं)

भावार्थ

हे प्रभु! जैसे महापुरुष जहाँ भी जाते हैं वहाँ के कष्टों को दूर कर देते हैं वैसे ही आपको जो हृदय में बुलाते हैं तो आप उनके शरीर (जो कष्टों का पिटारा है उसको ही) को ही नष्ट कर देते हैं।

अंग्रेजी

Oh God! Where ever the great men go, suffering are removed. Likewise, calling you at the core of the heart removes the pains of physical human bodies.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो गहनवणभयणासयाणं विज्जाहराणं।
(गहन वन भय नाश हेतु विद्याधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो गौरी (गौर्यायि?) इन्द्रे (इन्द्रायै) वज्रे (वज्रायै) ह्रीं नमः स्वाहा॥

पद्यानुवाद

जिस तन से प्रभु ध्यान करें, प्रभु उस तन को नाश करें-2
लगता है आश्चर्य अरे-SSS

महापुरुष जहाँ आते हैं, भवि के दुःख मिटाते हैं-2
ऐसा स्वभाव-हो-3, प्रभु का बतलाएँ रे-SS

जिससे तुमको ध्याया जाता, उसका तुम कर देते नाश,
लोक विरुद्ध बात यह भारी, कौन करे तुम पर विश्वास।
महापुरुष जिस तन में रहते, दुःख से उसे छुड़ाते हैं,
तन ही महादुःखों का डेरा, तन को नाश कराते हैं॥

जिस तन से भी ध्याया जाता, वह ही मिटता देखा जाता।
यह अचरज हमको लगता है, यह विपरीत अचंभा पाता॥
महापुरुषों का यही भाव है, अघ नाशें यह ही स्वभाव है।
तन तो है दुःखों की खान, हे प्रभु तेरा ही प्रभाव है॥

रूप-गंध नहीं वर्ण है, अविनाशी-अविराम।

पार्श्वनाथ भगवान को, करूँ “विनम्र” प्रणाम॥

ॐ ह्रीं देहदेहि कलह निवारकायं क्लीं महाबीजाक्षार सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्॥

युद्ध विग्रह विनाशक

आत्मा मनीषिभि रयं त्व-दभेद बुद्ध्या,
ध्यातो जिनेन्द्र! भवतीह भवत्प्रभावः।
पानीय - मध्यमृत - मित्यनुचिन्त्यमानं,
किं नाम नो विष विकार-मपाकरोति॥17॥

अन्वयार्थ

जिनेन्द्र! = हे जिनेश्वर देव!, इह = इस लोक में, मनीषिभिः = बुद्धिमानों के द्वारा, त्वदभेदबुद्ध्या = आपका अभेद बुद्धि से, ध्याताः = ध्यान किया गया, अयं = यह संसारी, आत्मा = आत्मा, भवत्प्रभावः = आप जैसे प्रभाव से युक्त, भवति = हो जाता है सो ठीक ही है, अमृतं = यह अमृत है, इति = इस प्रकार, अनुचिन्त्यात्मानं = चिंतन मनन वा ध्यान किया हुआ, पानीयं अपि = पानी भी, किं नाम विषविकारं = क्या विष के विकार को, नो अपाकरोति = दूर नहीं करता? अपितु करता ही है।

भावार्थ

हे प्रभु! जैसे पानी को अमृत समझ के पीने से वह अमृत हो जाता है वैसे ही अभेद बुद्धि से आपको जो ध्याता है वो आप जैसा प्रभावी हो जाता है।

अंग्रेजी

O God! As taking water thinking it as elixir, it turns into elixir, likewise the one meditating you with his impenetrable intellect becomes influential like you.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्टबुद्धि णासयाणं चारणाणं।
(कुण्ठबुद्धि नाशन के लिए चारण ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो धृति देव्यै ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं द्रां द्रीं नमः (स्वाहा)।

पद्यानुवाद

ज्ञानी प्रभु का ध्यान करें, जिनवर जैसी कांति वरें-2

निज में अमृतपान करें-SSS

मंत्रित हो जल मंत्रों से, विषय विकार विनाश करे-2

वैसे प्रभु नाम हो-3, अमृत बन जाये रे-SS

हे प्रभु! महामनीषी! तुमको, निर्विकल्पमय जब ध्याते,
तुम जैसे वैभवशाली बन केवलज्ञानी हो जाते।
निरत चिंतवन अमृत जल क्या, विष को दूर नहीं करता,
तेरे जैसा ध्यान अगर हो, तो क्या मुक्ति नहीं वरता॥

जो अभेद से ध्याता तुमको, वो ही उर में पाता तुमको।
शीघ्र तुम्हीं जैसा हो जाता, वही मिटाता सारे तम को॥
निर्मल जल मंत्रित हो जाता, तब वह अमृत सा हो जाता।
सारे विष को दूर भगाता, ऐसा गुण उसमें भर जाता॥

ॐ ह्रीं संसारविषसुघोपमाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपाश्र्वनाथाय अर्घ्यम्।

सर्प विष विनाशक

त्वामेव वीत तमसं परवादिनोऽपि,
नूनं विभो हरि-हरादि धिया प्रपन्नाः।
किं काच-कामलिभिरीश सितोऽपि शंखो,
नो गृह्यते विविध-वर्ण-विपर्ययेण॥18॥

अन्वयार्थ

विभो = हे भगवन्!, नूनं = निश्चय से, परवादिनः = अन्यमतावलम्बी नैयायिक आदि, वीत तमसं = अज्ञान, अन्धकार से रहित, त्वां = तुमको, एव = ही, हरिहरादिधिया = हरिहर आदि की बुद्धि से, प्रपन्नाः = प्राप्त होते हैं, पूजते हैं, ठीक ही है, ईश! = हे स्वामिन्, किं = क्या, काच कामलिभिः = काँच कम्बला रोग से पीड़ित मानवों के द्वारा, सितः = सफेद, अपि = भी, शंखाः = शंख, विविध वर्ण विपर्ययेण = विविध प्रकार के वर्ण की विपरीतता से, नो = नहीं, गृह्यते = ग्रहण किया जाता है?

भावार्थ

हे प्रभु! जैसे पीलिया रोग वाले को सफेद मटा भी पीला दिखता है वैसे ही वीतरागता से अनभिज्ञ अज्ञानी लोग आपको ब्रह्मा विष्णु महेश समझकर पूजते हैं।

अंग्रेजी

O God! As a patient suffering from jaundice sees even the white whey as yellow, in the same manner the ignorant people not knowing worldly detachme worship you considering as Brahma, Vishnu and Mahesh.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दक्ककराणं ओहि जिणाणं।
(द्रव्यकारण अवधिज्ञानी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो भगवते अभीप्सितकार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

पद्यानुवाद

भोगी देखे भोग जहाँ, योगी देखे योग वहाँ-2
उपयोगी उपयोग वहाँ-SSS
जैसा चश्मे का रंग हो, वैसा मंजर का रंग हो-2
पीली आँखों को हो-3, पीला नजराए रे-SSS

मिथ्या उदय रहे जिस मनु का, रागी कहते करि संजोग,
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर आदी, अन्यमती कहते सब लोग।
रोग पीलिया ग्रस्त खेत रंग, देखे पीला दिखता है,
हे प्रभु! दृष्टि दोष है इसमें, इस बिन क्या हो सकता है॥

अन्यमती हरदम ये जानें, तुमको ब्रह्मा-विष्णु मानें।
निश्चय से उनका अज्ञान, उन जैसा तब बुद्धि जानें॥
रोग पीलिया जब हो जाये, श्वेत आँख नहिं श्वेत दिखाये।
हे प्रभु! निश्चय से अज्ञान, जिसमें सत्य नहिं दिख पाये॥

ॐ ह्रीं सर्वजनवन्द्याय क्लीं महाबीजाक्षार सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

नैत्र रोग विनाशक

धर्मोपदेश समये स-विधानुभावा-
दास्तां जनो भवति ते तरु-रप्यशोकः।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि,
किं वा विबोध-मुपयाति न जीव लोकः॥19॥

अन्वयार्थ

धर्मोपदेशसमये = धर्मोपदेश काल में (समय), ते=आपके, सविधानुभावात् = सानिध्य के प्रभाव से, जनः आस्तां = मनुष्य तो दूर रहे परन्तु, तरुःअपि = वृक्ष भी, अशोकः = शोक रहित, भवति = हो जाता है, वा= ठीक ही है, दिनपतौ = सूर्य के, अभ्युद्गते = उदय होने पर, किं = क्या, समहीरुहः अपि = वृक्ष सहित भी, जीवलोकः = सारे संसार के प्राणी, विबोधं = बोध को प्राप्त, न उपयाति = नहीं होते हैं? अर्थात् बोध प्राप्त हो जाते हैं।

भावार्थ

हे भगवन्! जब आपके पास रहने वाला वृक्ष शोक रहित हो जाता है तो आपके पास रहने वाला व्यक्ति शोक रहित हो जाये तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

अंग्रेजी

O God! While the tree growing beside you becomes sorrow less, then a person living near you becomes sorrow less, this is not amazing.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खिगदणासयाणं आगास गामीणं।
(नेत्र रोग नाशन हेतु आकाशगामी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ (नमो भगवते) ह्रीं श्रीं क्लीं क्षां क्षीं नमः (स्वाहा)।

पद्यानुवाद

सूर्य जगत में आता है-सबका ज्ञान कराता है-2
खुशियों को भर जाता है-SSS
प्रभु होते जब पास यहाँ-शोक सभी हों नाश यहाँ-2
“वृक्ष अशोक” हो-3, सब शोक मिटाए रे-SS

धर्म उपदेश समय हे भगवन्! निकट आपके जो आता,
मानव तो बहु दूर रहे जब, तरु भी सुखमय हो जाता।
सूर्य उदित होने पर क्या सब, ज्ञान विकास नहीं पाते?,
वृक्ष कमल दल देख दिवाकर, विकसित हो नहीं मुस्काते?॥

होता जब उपदेश तुम्हारा, सबको होता हर्ष अपारा।
तरु भी शोक रहित हो जाता, समवशरण में लगता प्यारा॥
प्रातः सूर्य उदय में आये, अपनी आभा को फैलाये।
वृक्ष सभी जागृत हो जाते, ऐसी रवि महिमा बतलाए॥

ॐ ह्रीं अशोकवृक्ष विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षार सहिताय श्रीपाशर्वनाथाय अर्घ्यम्।

उच्चाटन निरोधक

चित्रं विभो! कथ-मवाङ्मुख-वृन्तमेव,
विष्वक्पतत्यविरला सुर पुष्प वृष्टिः।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश!
गच्छन्ति नून-मध एव हि बन्धनानि॥20॥

अन्वयार्थ

विभो! = हे स्वामिन!, चित्रं = यह बहुत बड़ा आचर्य है कि, विष्वक् अविरला = चारों तरफ से अति अधिक व्यवधान रहित, सुरपुष्पवृष्टिः = देवों के द्वारा की हुई पुष्पवृष्टि, अवाङ्मुखवृन्तं = नीचे को डंठल करके, कथं पतति = क्यों गिरती है, यदि वा = अथवा यह कथन ठीक ही है?, हि = क्योंकि, मुनीश = हे मुनियों के नाथ!, त्वद्गोचरे = आपके सान्निध्य में, सुमनसां = फूलों के अथवा अच्छे मन वाले ज्ञानी प्राणियों के, बन्धनानि = फूलों के डंठल (कर्म बंधन), नूनं = निश्चय से, अधः एव गच्छन्ति = नीचे को ही जाते हैं।

भावार्थ

हे प्रभु! आपके ऊपर फूलों की वर्षा के समय उनके डंठल नीचे होते हैं जो ठीक है जो आपके चरणों में गिरते हैं उनके कर्मबंधन नीचे गिर जाते हैं।

अंग्रेजी

O God! While flowers are raining on you, their stems are all downwards this is right, those who bow down in your feet, their karmic bonds fall downwards.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो गहिलगहणासयाणं आसीविसाणं।
(उच्चाटन निरोधन हेतु आशीविष ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ (भगवत्यै) ब्रह्माणि (ण्यै?) नमः स्वाहा।

पद्यानुवाद

ज्ञानी देव तुम्हें लखते, चरणों में वो आ झुकते-2

जैसे कर्म सभी मिटते-SSS

“पुष्पवृष्टि” जब देव करें, ऊपर पंखुरी फूल गिरें-2
डंठल हो नीचे-ऋषिजन बतलाएँ रे-SSS

सभी दिशा में खिले पुष्प को, देव स्वयं बरसाते हैं,
डंठल नीचे होकर आते, महिमा तेरी गाते हैं।
हे जिन! तेरे निकट जो बंधन आते वो झुक जाते हैं,
तेरी शक्ति गुणों को लखकर, विनत सुधी हो जाते हैं।

अचरज होता हमको भाई, देव पुष्प वर्षाते भाई।
डण्ठल नीचे क्यों हो जाता, ये प्रभु! बात समझ न आई।
अब तक यही समझ में आया, अच्छे मन से तुमको ध्याया।
कर्मों को सब गिरते पाया, हे प्रभु! यह सब तेरी माया।

अजर-अमर-अक्षय परम, अमृतमय शुभधाम।

उन प्रभु पार्श्वनाथ को, करूँ “विनम्र” प्रणाम॥

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टि शोभिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

शुष्कवनोपवन विकाशक

स्थाने गभीर-हृदयोदधि-सम्भवायाः,
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति।
पीत्वा यतः परम-सम्मद-संग-भाजो,
भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम्॥21॥

अन्वयार्थ

हे स्वामिन्! = हे जिनेन्द्र देव!, गभीर हृदयोदधि संभवायाः = गंभीर हृदय रूपी समुद्र से उत्पन्न हुई, तव गिरः = आपकी वाणी को, पीयूषतां = अमृतमय, समुदीरयन्ति = कहते हैं, स्थाने = उनका यह कथन ठीक ही है, यतः भव्याः पीत्वा = क्योंकि उस अमृतमयी आपकी वाणी का भव्य जीव पान कर, परम संमदसंग भाजः = परम सुख के भागी होते हुए, तरसा = शीघ्र ही, अजरामरत्वं अपि = अजर अमर पदों को भी, व्रजन्ति = प्राप्त हो जाते हैं।

भावार्थ

हे प्रभु! आपकी अमृत वाणी पीकर सुखी होने वाले भव्य प्राणी ही अजर-अमर पद पाते हैं-अर्थात् जो पूर्णसुखी हों उन्हें ही अनंतसुख प्राप्त होता है।

अंग्रेजी

O God! Only those auspicious people who listens to your elixir like preaching get eternity, in other words only those who are entirely happy get infinite pleasure.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पुण्ड्रियतरुवत्तयराणं दिट्ठि विसाणं।
(उपवन विकास हेतु दृष्टि विष ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ भगवती (त्वै?) पुष्पपल्लवकारिणी नमः (स्वाहा)।

पद्यानुवाद

अमृत जैसी वाणी है, सबको ही सुखदानी है-2
“दिव्यध्वनि” कल्याणी है-SS
ज्ञानी पीकर हुए प्रखर, पाते पद जो अजर अमर-2
पारस की वाणी हो-3, भव पार कराए रे-SS

हृदयरूप गंभीर जलधि में, वाणी जन्मी अमृत सम,
पीकर लोग जिनेश्वर! उसको सभी मिटाते अपने गम।
जन्म जरा मृत रोग हटाकर, अजर अमर हो जाते हैं,
तेरी दिव्य ध्वनि को सुनकर, सिद्ध रूप भवि पाते हैं॥

महाहृदय से निकली वाणी, सुनकर तृप्त हुआ ये प्राणी।
हे प्रभु! अमृत सी लगती है, परम पीयूष कही जिनवाणी॥
पीकर उत्तम अनुभव करता, तब वह शाश्वत सुख को वरता।
अजर-अमर पद पा जाता है भव से वह ही पार उतरता॥

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि विराजिताय क्लीं महाबीजाक्षार संहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

मधुरफल प्रदायक

स्वामिन्! सुदूर-मवनम्य समुत्पतन्तो,
मन्ये वदन्ति शुचयः सुर चामरौघाः।
येऽस्मै नतिं वि-दधते मुनि-पुंगवाय,
ते नूनमूर्ध्व-गतयः खलु शुद्धभावाः॥२२॥

अन्वयार्थ

स्वामिन्! = हे भगवन्!, मन्ये = मैं ऐसा मानता हूँ कि, सुदूर = नीचे को बहुत दूर तक, अवनम्य = नम्रीभूत होकर, समुत्पतन्तः = ऊपर को जाते हुए, शुचयः = पवित्र उज्ज्वल, सुरचामरौघाः = देवों के द्वारा ढोरे गये चौंसठ चँवरों का समूह, वदन्ति ये = कहते हैं कि जो भव्यप्राणी, अस्मै मुनिपुंगवाय = इन श्रेष्ठ मुनि को, नतिं = नमस्कार, विदधते = करते हैं, ते = वे, नूनं = निश्चय से, शुद्धभावाः = निर्मल भाव धारी होकर, ऊर्ध्वगतयः = ऊर्ध्वगमन करने वाले, भवन्ति = होते हैं, खलु = सत्य है अर्थात् स्वर्ग मोक्ष को प्राप्त होते हैं,

भावार्थ

हे प्रभु! नीचे से ऊपर दुरते हुए चमर ये बता रहे हैं जो नीचे झुककर प्रभु को प्रणाम करते हैं वे ही ऊर्ध्वगति वाले होकर मोक्ष प्राप्त करते हैं।

अंग्रेजी

O Lord! The chanwar (whisk) coming from down to upwards are showing that who offer salutation bowing down in the feet of Lord, only those going upward get liberation.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तरुपत्तणासयाणं उग्ग तवाणं।
(मधुर फल प्रदान हेतु उग्रतपधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो पद्मावत्यै मल्ल्यू नमः स्वाहा।

पद्यानुवाद

चौंसठ चंमर दुराते हैं, देव नम्र हो जाते हैं-2
भक्ति श्रेष्ठ दिखाते हैं-SSS

शुद्ध भाव मन में लाते-वे चरणों में झुक जाते
ऊर्ध्वगामी बन-हो-3, वह शिवपुर जाये रे-SSS

नीचे से ऊपर फहराते, चँवर दुराते सारे देव,
ऐसा ऋषि कहते हैं यह फल, मिलता उन्हें करे वृष सेव।
जो चरणों में झुक जाता है, वह ऊपर उठ जाता है,
स्वर्ग मोक्ष का स्वामी बनता, भव सागर तिर जाता है॥

चरण कमल में झुक-झुक जाते, फिर पावन ऊपर उठ जाते।
ऐसे चौंसठ चँवर बताते, प्रभु की शोभा खूब बढ़ाते॥
यही मानता हूँ मैं प्रभुवर, पाते वही सुखों का सरवर।
जो जितने नीचे झुक जाते, वो उतने ऊपर उठ जाते॥

ॐ ह्रीं सुरचामर विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपाश्वर्नथाय अर्घ्यम्।

राज्य सम्मान दायक

श्यामं गभीर-गिर-मुज्ज्वल हेमरत्न-
सिंहासनस्थमिह भव्य शिखण्डिनस्-त्वाम्।
आलोकयन्ति - रभसेन नदन्त - मुच्चैश्,
चामीकराद्रि-शिरसीव नवाम्बुवाहम्॥23॥

अन्वयार्थ

इह = इस लोक में, श्यामं = श्याम वर्ण, गभीरगिरं = गम्भीर वाणी से युक्त, उज्ज्वल हेमरत्न = निर्मल स्वर्ण और रत्नों से जड़ित, सिंहासनस्थं = सिंहासन पर बैठे हुए, त्वां = आपको, भव्य शिखण्डिनः = भव्यरूपी मयूर, चामीकराद्रिशिरसि = सुमेरु पर्वत की चोटी पर, उच्चैः = ऊँचे रूप से, नदन्तं = गर्जना करते हुए, नवाम्बुवाहं = नवीन बादल के, इव = समान, रभसेन = आनंदविभोर होकर, आलोकयन्ति = देखते हैं।

भावार्थ

हे प्रभु! जैसे सुमेरु पर्वत पर गर्जना करते हुए काले बादल छा जाते हैं वैसे ही स्वर्णमयी सिंहासन पर आपका श्यामल शरीर कांतिमान हो रहा है।

अंग्रेजी

Oh God! Like the mount Sumer covered by the darkened clouds glow, similarly your body is glowing on the golden throne.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं गमो बंधणहरणाणं दित्ततवाणं।
(बंधन मुक्ति हेतु दीप्त तप ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो श्रीं क्लीं झां झां झां झां नमः (स्वाहा)।

पद्यानुवाद

मेरु शिखर पर आये हों, काले बादल छाये हों-2
गर्जन करते आये हों-SSS

त्यो ही स्वर्णिम “सिंहासन”, उस पर श्यामवर्णमय तुम
शोभित होते हो-हो-3 मन सभी लुभाएँ रे-SS

स्वर्णमयी मेरु पर्वत पर, गरजें काले मेघ फुहार,
देख मयूर खुशी से नाचें, शोभा जिसकी अपरंपार।
वैसे सिंहासन सोने पर राजित पार्श्वनाथ भगवान्,
भक्त मयूर लखें जब उनको, हर्षित हों गाते गुणगान॥

रत्नमयी सुन्दर सिंहासन, उस पर श्याम वर्ण के भगवन्।
भव्यजनों को अति सुखकारी, देख स्व-सुख की होती गर्जन॥
स्वर्णिम पर्वत मेरु बताया, उस पर काला बादल छाया।
भव्य मयूर देख खुश होता, हे प्रभु! दृश्य यही मन भाया॥

ॐ ह्रीं पीठत्रय नायकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

शत्रुविजित राज्य प्रदायक

उद्गच्छता तव शिति - द्युति - मण्डलेन,
लुप्तच्छदच्छवि - रशोक - तरुर्बभूव।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग!
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि॥24॥

अन्वयार्थ

उद्गच्छता = अतिशय प्रभा से दैदीप्यमान, तव = आपके,
शितिद्युतिमण्डलेन = नील वर्ण की कान्ति के प्रभा पुंज से, अशोक तरुः =
अशोक वृक्ष, लुप्तच्छदच्छविः = कांतिहीन पत्रों वाला, बभूव = हो गया
था, यदि वा = अथवा वीतराग! = हे वीतराग स्वामी! तव सान्निध्यतः
अपि= आपके सान्निध्य को प्राप्त कर, कः = कौन, सचेतनः = चेतन पुरुष,
नीरागतां = वीतरागता को, न = नहीं, व्रजति = प्राप्त होता है? अर्थात् प्राप्त
होता है।

भावार्थ

हे भगवन्! जैसे आपके प्रभाव से भामण्डल भी प्रभावशाली हो गया वैसे ही
जो पुरुष आपके पास आये उसका आभामण्डल भी प्रभावशाली हो जाता

अंग्रेजी

O Lord ! As the bhamandal (aura) becomes effective with
your influence, similarly the person who visits you has his
aura influenced too.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अहं णमो रज्जदावयाणं तत्ततवाणं।
(राज्य प्राप्ति हेतु तप्ततप ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ ह्रीं भ्रां भ्रीं षोडशभुजे (जायै?) पद्मे (दिमयै) प्रौं (प्रौं?) हूं हौं नमः (स्वाहा)।

पद्यानुवाद

सात भवों को दर्शाता, भामण्डल वह कहलाता-2
महाकांति को दिखलाता-SS

वीतरागता लखता जो, वीतरागमय हो जाता-2
प्रभु की महिमा को, हो-3 सब देव सुनाएँ रे-SS
श्याम प्रभामण्डल अति तेरी, कांतिहीन तरु हुआ अशोक,
हे प्रभु! रहे सामने तुम छवि, तरु अशोक तब करता शोक।
वीतरागता निकट रहे तो, राग रहित वह हो जाता,
कौन पुरुष ऐसा नहीं होता? जिसे नजर भव ना आता॥

हे प्रभु! भामण्डल सुखकारी, महिमा कांतिमान अति प्यारी।
तरु अशोक की कांति दबाता, अपनी महिमा तेज प्रकाशी॥
वीतरागता जो पा जाता, उसका तेल अधिक बढ़ जाता।
राग-द्वेष फीका पड़ जाता, विजयी होती वीतरागता॥

प्रातिहार्य संयुक्त हैं, चार चतुष्टय धाम।

पार्श्वनाथ गुणधाम हैं उन्हें “विनम्र” प्रणाम॥

ॐ ह्रीं भामण्डल मण्डिताय क्लीं महाबीजाक्षार सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

असाध्य रोग नाशक

भो भो प्रमाद-मवधूय भजध्वमेन-
मागत्य निर्वृति पुरीं प्रति सार्थवाहम्।
एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्-नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते॥२५॥

अन्वयार्थ

देव! = हे देव!, मन्ये = मैं मानता हूँ कि, अभिनभः = चारों तरफ आकाश में, नदन् = शब्द करती हुई, ते = आपकी, सुर दुन्दुभिः = देव दुन्दुभि द्वारा, जगत्-त्रयाय = तीन लोक के भव्य जीवों को, एतत् = यह, निवेदयति = सूचित कर रही है कि, भो-भो = रे रे प्राणियो!, प्रमादं = प्रमाद को, अवधूय = छोड़कर, आगत्य = यहाँ आकर, निर्वृतिपुरीं-प्रतिसार्थवाहं = मोक्षपुरी के प्रति मुखिया अर्थात् मुक्तिपुर में ले जाने वाले, एनं = इन पार्श्व प्रभु की, भजध्वं = भजो-सेवा करो।

भावार्थ

हे भगवन्! आकाश गुँजाती दुंदुभि लोगों को बुलाते हुए ये कह रही है कि सब लोग यहाँ आओ और ऐसा वैभव प्राप्त करो।

अंग्रेजी

O God! The echo of the sound of Dundubhi (a musical instrument) in the sky is saying that everybody should come here and get such a splendid glimpse.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो हिंडलमलणासं महातवाणं।
(असाध रोग नाशन हेतु महातप ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो धरणेन्द्र पद्मावत्यै नमः (स्वाहा)।

पद्यानुवाद

नभ में शब्द गुँजाती है, सबको पास बुलाती है-2
जो दुंदुभि कहलाती है-SS
मुक्तिनगर के वैभव को-पालो ये बतलाती है-2
दुंदुभि-भगवन की हो-3 संगति दिलवाए रे-SS

हे प्रभु! तेरी दुंदुभि प्यारी, गुँज रही शुभमय आकाश,
सूचित करती भव्य जनों को आओ सब जिनवर के पास।
मुक्ति महल यदि जाना तुमको, राग द्वेष तज कर लो ध्यान,
सेवा कर लो भक्ति भाव से, आए पार्श्वनाथ भगवान्॥

नभ में दुंदुभि गुंजन करती, भव्यों का अभिनंदन करती।
सुख पाने आ जाओ भव्यो सबको, यह ही सूचित करती॥
छोड़ प्रमाद यहाँ पर आओ, प्रभु की वाणी हृदय समाओ।
मुक्ति नगर ले जाने वाला, सुख वैभव उत्तम पा जाओ॥

ॐ ह्रीं देवदुन्दुभि नादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

वचन सिद्धि प्रतिष्ठापक

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ!
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः।
मुक्ता - कलाप - कलितोरुसितात पत्र-
व्याजात् त्रिधा धृत तनुर्ध्रुव-मभ्युपेतः॥26॥

अन्वयार्थ

नाथ! = हे स्वामिन्, भवता = आपके द्वारा, भुवनेषु = तीनों लोकों के, उद्योतितेषु = प्रकाशित हो जाने पर, विहताधिकारः = नष्ट हो गया है अधिकार जिसका ऐसा, तारान्वितः = ताराओं से युक्त, अयं = यह, विधुः = चन्द्रमा, मुक्ताकलाप-कलितोरुसितात पत्रव्याजात् = मोतियों के समूह से युक्त तेजस्वी ऐसे तीन छत्रों के छल से, त्रिधाधृततनुः = तीन-तीन के शरीर को धारण करके, ध्रुवं = निश्चय से, अभ्युपेतः = आपकी शरण में आया है।

* तोल्ल

भावार्थ

हे प्रभुवर! आपके ऊपर तीन छत्र तीन चन्द्रमा की तरह दिख रहे हैं और मोतियों की झालर की तरह तारे, जो तीनों लोक पर विजय बता रहे हैं कि आपने तीनों लोक को प्रकाशित किया है।

अंग्रेजी

O Lord! The three chhatras over you are looking like the three moons and skirting of pearls looking like stars which are signifying your victory over three lokas (worlds), lighting up the three folks.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जयंपदाईणं घोरतवाणं।
(विजय प्राप्ति हेतु घोर तप ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रां श्रीं श्रूं श्रः पद्मे (पद्मायै) नमः स्वाहा।

पद्यानुवाद

तीन छत्र प्रभु के ऊपर, जिनमें मोती की झालर-2
जैसे तीन चन्द्र सुंदर-SS
तीन लोक का ज्ञान कहें, बहुत बड़ा सम्मान कहें-2
छत्रों की महिमा हो-3 क्षत्रिय बतलाएँ रे-SS

अपनी आभा से परकाशित, करते हैं, त्रयलोक महान्,
चन्द्रकांति का काम रहा क्या, जहाँ विराजे हैं भगवान्।
तीन छत्र त्रयचन्द्र समां हैं, मोती को तारागण जान,
सूर्य प्रताप रोकने हेतु, देवों ने यह किया सुकाम॥

लोकालोक ज्ञान में आये, हे प्रभु! परम ज्ञान जब पाए।
अंधकार सारा मिट जाये, गुण की विजय ध्वजा फहराए॥
तब शुभ तीन छत्र आ जाएँ, प्रभु के सिर पर थान बनाएँ।
मोती की आभा फैलाकर, शोभा प्रभु की खूब बढ़ाएँ॥

ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपाश्र्वनाथाय अर्घ्यम्।

वैर विरोध विनाशक

स्वेन प्रपूरित जगत्त्रय पिण्डितेन,
कान्ति प्रताप यशसामिव संचयेन।
माणिक्य - हेम - रजत प्रविनिर्मितेन,
शालत्रयेण भगवन्-नभितो विभासि॥27॥

अन्वयार्थ

भगवन् = हे स्वामिन्!, प्रपूरित जगत्त्रय पिण्डितेन = परिपूर्ण किया है, तीन जगत् के पिण्ड को जिन्होंने ऐसे, स्वेन = अपनी, कान्ति प्रताप यशसां = कान्ति प्रताप और यश के, संचयेन इव = समूह के समान, माणिक्य हेम रजत प्रविनिर्मितेन = माणिक्य, सुवर्ण और चाँदी के द्वारा निर्मित, शालत्रयेण = तीन परकोटे के द्वारा, अभितः = चारों तरफ, विभासि = शोभित होते हैं।

भावार्थ

हे भगवन्! समवशरण में मणियों की भूमि, माणिक्य, स्वर्ण, चाँदी के बने कोट द्वार आपकी कान्ति, यश, प्रताप को बता रहे हैं।

अंग्रेजी

O God! The samausharan, the land of beads, rubies, goldsmiths, gold and silver walls and doors, is signifying your achievement, radiance and majesty.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खलदुट्ठणासयाणं घोरपरक्कमाणं।
(वैर विरोधनाशन हेतु घोर पराक्रम ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं धरणेन्द्र पद्मावती बल पराक्रमाय नमः (स्वाहा)।

पद्यानुवाद

चाँदी माणिक्य स्वर्णमयी, कोट बने त्रयवर्णमयी-2
समवशरण है शरणमयी-SS
कान्ति प्रताप दिखाता है-प्रभु का यश बतलाता है-2
धर्म सभा में-हो-3 सब भव्य दिखाएँ रे-SS

रत्नमयी भू-समवशरण की, स्वर्ण कमल राजित भगवान्,
कनकमयी त्रय कोट आपकी, महिमा अनुपम अद्भुत जान।
तीन लोक में पुण्य महाफल, यशोगान शुभकीर्ति महान,
ऐसे पार्श्वनाथ जिनवर को, करता हूँ अति नम्र प्रणाम॥

समवशरण सुंदर इस जग में, राजित है सारा इस नभ में।
स्वर्ण-रजतमय तीन कोट हैं, प्रभुवर हैं उसके अन्दर में॥
यश जिनवर का फैल रहा है, वर्तुल रूप में बिखर रहा है।
महाकान्ति के हैं अधिनायक, ये प्रताप सब बोल रहा है॥

ॐ ह्रीं शालत्रयाधिपतये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

यशः कीर्ति प्रसारक

दिव्य-स्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपाना-
मुत्सृज्य रत्न रचिता-नपि मौलिबन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र,
त्वत्संगमे सु-मनसो न रमन्त एव॥28॥

अन्वयार्थ

जिन! = हे जिनेश्वर!, नमत् त्रिदशाधिपानां = विनय से नम्रीभूत इन्द्रों के,
रत्नरचितान् = रत्नों से जड़ित, मौलिबन्धान् अपि = मुकुट की मणियों को
भी, उत्सृज्य = छोड़कर, दिव्यस्रजः = स्वर्ग से आये हुये देवों के मुकुटों की
दिव्य पुष्प मालाएँ, भवतः पादौ श्रयन्ति = आपके चरणों का आश्रय लेती हैं,
यदि वा = यह कथन सत्य है क्योंकि, सुमनसः = अच्छे मन वाले प्राणी,
त्वत्संगमे = आपके समीप में ही, रमन्तः एव = रमण करते हैं, परत्र =
परलोक में अन्य कुदेवादिक स्थानों में, न रमन्तः = रमण नहीं करते हैं।

भावार्थ

हे भगवन! इन्द्रों की मालाएँ, मुकुटों के मणि, नमन करते समय चरणों में गिर
जाती हैं सो ठीक है, आपका समागम पाकर, विद्वान पुरुष अन्य कहीं रहना
पसंद नहीं करते।

अंग्रेजी

O God! While bowing before you the gems of the heavens
being fallen into your feet are seen, that is why after
meeting you, scholars do not like being anywhere else.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उवदववज्जणाण घोर गुणाणां।
(उपद्रव निवारणार्थं घोर गुण ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्रों (क्रौं?) वषट् स्वाहा।

पद्यानुवाद

देव प्रभु को झुक जाएँ, गिरें चरण में मालाएँ-2
प्रेम चरण से दिखलाएँ-55

गुल, विद्वान वहीं रहते, प्रभु के चरण जहाँ पड़ते-2
झुकता जो प्रभु को हो-3, वो उठता जाए रे-55

दिव्य पुष्प की मालाएँ सुर, मुकुटों में जगमग करतीं,
हे प्रभु! तव चरणों को पाकर, छोड़ मुकुट पद को वरतीं।
तुमको पाकर कोई सुधीजन, जाता नहीं अन्य स्थान,
जहाँ प्रेम उत्तम मिलता है, प्राणी वहीं करे विश्राम॥

नमस्कार इन्द्रादिक करते, रत्न मुकुट में शोभा वरते।
उनमें जड़ित पुष्पमालाएँ, जिनवर के चरणों गिर पड़ते॥
प्रभु चरणों से प्रेम हुआ है उसने भव दुख छोड़ दिया है।
अच्छे मन वाले ये प्राणी, जिसने प्रभु पद प्रेम किया है॥

इन्द्र विनम्र करें नमन, करके प्रभु गुणगान।

पार्श्व जिनेश महान हैं, उन्हें “विनम्र” प्रणाम॥

ॐ ह्रीं भक्तजनानवनपतिराय क्लीं महाबीजाक्षार सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

आकर्षण कारक

त्वं नाथ! जन्म जलधे-विपराङ्मुखोऽपि,
यत्तारयस्य सुमतो निज पृष्ठ लग्नान्।
युक्तं हि पार्थिव - निपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो यदसि कर्म विपाक शून्यः॥29॥

अन्वयार्थ

नाथ! = हे भगवान्!, त्वं = आप, जन्मजलधे: = संसार समुद्र से, विपराङ्मुखः = विमुख होने पर, अपि = भी, यत् = जो, निजपृष्ठलग्नान् = अपने पीछे लगे हुए अपने, सुमतः = अनुयायी भव्य प्राणियों को, तारयसि = पार करते हैं, हि तव = निश्चय से आपके लिए, युक्तं हि = युक्त ही है क्योंकि, पार्थिव निपस्य = घड़ा अपने पीछे लगे हुए प्राणियों को समुद्र से तारता है, सतस्तवैव = उसी प्रकार, विभो = हे पृथ्वी पतियों के राजा! तीन लोक के अधिपति, तुम भी अपने भक्तों को संसार से पार करते हो, चित्रं = आश्चर्य है कि घट तो विपाक युक्त होता है तब प्राणियों को तारता है परन्तु आप, यदसि कर्म विपाक शून्यः = कर्म के विपाक से रहित हो फिर भी संसारी प्राणियों को तारते हो।

भावार्थ

हे प्रभु! जैसे अधोमुखी घड़ा लोगों से विमुख होकर सबको नदी पार करा देता है वैसे ही आप सबसे विमुख होकर भव्यों को भव पार करा देते हो।

अंग्रेजी

O Lord ! As the picture with the head downwards being attached to none helps all to cross over the river. Likewise you being detached to all, help creatures to get over the worldly life. (get salvation)

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो देवानुप्पियाणं घोर गुणबंभयारीणं।
(आकर्षण हेतु घोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ ह्रीं क्रौं ह्रीं हूं फट् स्वाहा।

पद्यानुवाद

अधोमुखी घट, जल में हो, पार कराए नदियों को-2
वैसे ही प्रभु आप अहो-SS
भव में वीतरागमय हो, सबको पार कराते हो-2
महती महिमा को हो-सब मुनिगण गायें रे-SS

भव में कमल समां रहते भी, भविजन तारन हारे हो,
ऐसी महिमा के तुम ईश्वर, हर प्राणी को प्यारे हो।
अचरज है बहु उत्तम इसमें, राग द्वेष से रहते दूर,
फिर भी कर्म बंध बिन हो तुम, ध्यान लीन हो चेतन शूर॥

तेरी महिमा अगम अपार, गणधर कहत न पावहिं पार।
घड़ा पार करवाता सरवर, प्रभुवर करवाते संसार॥
जो भी तेरे चरणों आता, तुमको अपने उर से गाता।
अपने सारे दुःख भूलकर, भवसागर से वह तिर जाता॥

ॐ ह्रीं निजपृष्ठलग्न भयतारकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपाशर्वनाथाय अर्घ्यम्।

असंभव कार्य साधक

विश्वेश्वरोऽपि जन पालक! दुर्गतस्त्वं,
किं वाक्षर प्रकृति-रप्यलिपिस्त्वमीश!।
अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व विकास हेतुः॥३०॥

अन्वयार्थ

जनपालक! = हे जनपालक!, त्वं = आप, विश्वेश्वर = तीन लोक के स्वामी हैं, अपि = फिर भी, दुर्गतः किं = दरिद्र क्यों हो, ईश त्वं = हे स्वामी आप, अक्षर प्रकृतिः अपि = अक्षर स्वभाव वाले होकर भी, अलिपिः = लेखन क्रिया की क्षमता से रहित, किं = क्यों हो? वा अथवा, अज्ञानवति = अज्ञान वान् होने पर, अपि = भी, त्वयि सदैव = आप में निरन्तर, कथंचित् = किस प्रकार से, विश्व विकास हेतुः = विश्व को प्रकाशित करने में कारणभूत, ज्ञान किं = ज्ञान क्यों, स्फुरति = स्फुरायमान रहता है।

भावार्थ

हे जीवों के रक्षक! अक्षरज्ञान रहित फिर भी ज्ञानी हो, दरिद्र होने पर भी त्रिलोकस्वामी हो, इन्द्रिय मन से अज्ञान होने पर भी आपका ज्ञान तीनों लोक को प्रकाशित करने वाला है।

अंग्रेजी

O the protector of creatures! Though illiterate and without writing skills, yet knowledgeable, even being poor, you are master of the trilok (three worlds), even being ignorant of the sensuous mind, your knowledge is capable to light up the three lokas (three worlds).



ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अपुष्पबल पदाईणं आमोसहि पत्ताणं।
(अपूर्वबल प्रदायक आमर्षोषधि ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लू प्रौं (प्रों?) हूं नमः स्वाहा।

पद्यानुवाद

लिखते नहीं पढ़ते नहीं हो, ज्ञान रहित दारिद्री हो-2
फिर भी सबके रक्षक हो-SS
अज्ञानी, असहायी हो, पर तुम केवलज्ञानी हो-2
सारी दुनियाँ को-हो-3 प्रभु यहाँ बताएँ रे-SS

जीवों के रक्षक हे प्रभु! तुम, दबा नहीं धन रंच न लेश,
अक्षर ज्ञान समुद्र है लेकिन लेखन क्रिया नहीं शुभ भेष।
इस ढंग से अज्ञानी लगते ज्ञान आपमें भरा विशेष,
सब पदार्थ दर्शाने वाला, दिखा आप में दर्श अशेष॥

मालिक जग के फिर भी निर्धन, अक्षर ज्ञान है नहीं लेखन।
अज्ञानी पर जान रहे सब, यही विरोधाभास है भगवन्॥
कठिनाई से जाने जाते, हो आकार रहित बतलाते।
फिर भी केवलज्ञान प्रकाशित, तारन हारे प्रभु सब गाते॥

ॐ ह्रीं विस्मयनीय मूर्तये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।



शुभाशुभ प्रश्न दर्शक

प्राग्भार संभृत नभांसि रजांसि रोषा-
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तव न नाथ! हता हताशो,
ग्रस्तस्त्वमीभि-रयमेव परं दुरात्मा॥31॥

अन्वयार्थ

नाथ! = हे स्वामिन्!, रोषात् = पूर्वोपार्जित राग-द्वेष-क्रोध के कारण,
शठेन = मूर्ख, कमठेन = कमठ के द्वारा, यानि = जो, प्राग्भारसम्भृतनभांसि
= सम्पूर्ण रूप से आकाश को व्याप्त करने वाली, रजांसि = रज को (धूलि),
उत्थापितानि = आपके प्रति उड़ाई थी परन्तु, तैः तव छाया = उस धूलि के
द्वारा आपकी छाया को, अपि न = भी नहीं, हता = ढक सका, तु हताशः =
परन्तु नष्ट हो गई है आशा जिसकी अर्थात् निराश होकर, अयं दुरात्मा = वह
दुष्ट कमठ, एव = ही, अमीभिःग्रस्तः = उस कर्म रूपी धूलि के द्वारा मलीन
हो गया। जकड़ा गया।

भावार्थ

हे भगवन! कमठ के द्वारा आपके ऊपर धूल और पत्थर बरसाए आपकी
समता से वो हताश हुआ, कई दुःखों को प्राप्त हुआ पर आपका वो कुछ भी
नहीं बिगाड़ सका।

अंग्रेजी

O God! Kamath rained dust and stones on you, he became
irritated with your samata (equanimity), passed through a
number of sorrows and miseries, but he could not cause
you harm in any way.



ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो इट्ठविण्णत्तिदावयाणं खेल्लोसहि पत्ताणं।
(इष्टानिष्ट दर्शनार्थं क्षेलौषधि ऋद्धिधारी जिनो को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो भगवति चक्रधारिणि भ्रामय भ्रामय मम शुभाशुभं दर्शय दर्शय स्वाहा।

पद्यानुवाद

प्रभु थे ध्यान तपस्या में, धूल उड़ा दी थी नभ में-2
कमठ दुष्ट ने क्रोधित में-SS

उसे कर्मरज ने जकड़ा, प्रभु ने समता को पकड़ा-2
समता जो धारे हो, मंजिल वह पाये रे-SS

दुष्ट कमठ ने पार्श्व प्रभू पर, ताकत भरके डाली धूल,
लेकिन हे प्रभु! उसने ही खुद, बंधन कर डाले प्रतिकूल।
तन की तो बहुदूर बात है, धूल न छाया छू पायी,
कर्म रजोमय धूल उसी पर, गिरी बनी भव दुखदायी॥

हे प्रभु! बैरी कमठ जु आया, करि उपसर्ग बहुत हर्षाया।
धूलि आपके ऊपर फैकी, धूलि न छू पाई तव छाया॥
दुष्टभाव से कार्य किया यह, विफल मनोरथ यहाँ हुआ वह।
भव-भव में दुःख पाये भारी, कर्मबंध से मलिन हुआ वह॥

ॐ ह्रीं कमठोत्थापित धूल्युपद्रवजिताय क्लीं महाबीजाक्षार सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।



दुष्टता प्रतिरोधी

यद्गर्ज-दूर्जित घनौघ - मदभ्र भीम-
भ्रश्यत्तडिन् मुसल मांसल घोरधारम्।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर वारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन दुस्तर वारि कृत्यम्॥३२॥

अन्वयार्थ

जिन! = हे जिनेश्वर! दैत्येन यत् = उस कमठ जीव दैत्य के द्वारा जो,
गर्जदूर्जित घनौघ = भयंकर गर्जना वाले मेघों का समूह है जिसमें ऐसी,
अदभ्रभीम = अत्यन्त भयंकर, भ्रश्यत्तडिन्-मुसलमांसल घोर धारं =
चमकती एवं कड़कती हुई बिजली के साथ घोर शब्द करती हुई मूसलाधार है
जिसमें ऐसी, दुस्तरवारि = अथाह पानी की, मुक्तं अथ = वर्षा की थी
अथवा, तेन = उस मूसलाधार वर्षा के द्वारा, तस्य = उस दैत्य ने अपने लिए,
एव = ही (कठोर), दुस्तर वारि कृत्यम् = तीक्ष्ण तलवार का काम, दध्रे =
किया अर्थात् व्रण कर लिया।

भावार्थ

हे भगवन! कमठ ने मेघ गर्जाये, बिजली गिराई, मूसलाधार पानी गिराया
इससे उसने खुद को दुखी किया आपका कुछ भी न बिगाड़ पाया।

अंग्रेजी

O God! Kamath made the clouds to thunder, made the
lightning to fall, made the torrential rains to fall, but he
made himself sad and could not cause you any harm.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्टमदणासयाणं जल्लोसहि पत्ताणं।
(अष्टमद नाश हेतु जल्लौषधि ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार है)

मंत्र

ॐ नमो भगवते मम शत्रून् बंधय बंधय ताडय ताडय,
उन्मूलय उन्मूलय छिंद छिंद भिंद भिंद स्वाहा।

पद्यानुवाद

बिजली गरज रही भारी, बरसे मेघ प्रलयकारी-2
जलवृष्टि अति भयकारी-SS
कमठ ने दुख उपजाया था, खुद ही दुःख बढ़ाया था-2
प्रभु ने सब सहकर-हो-3 सारे गुण पाये रे-SS
पानी मूसलाधार गिराकर, गर्जाए बादल अतिभीम,
मगर तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा, बिजली कड़की महा असीम।
स्वयं कमठ ने घाव किए तन, लेकर भावमयी तलवार,
बंध हुआ कर्मों का भारी, सहना पड़ी जगत में मार॥
मूसलधार सलिल वर्षाया, बिजली का आतंक दिखाया।
महा भयंकर गर्जन वाले, मेघों की ऊपर करि छाया॥
कमठ ने ऐसा कृत्य दिखाया, निज अंसि से खुद घाव बनाया।
लेकिन प्रभु को डिगा न पाया, ऐसा श्री गुरु ने बतलाया॥
देवों के जो देव हैं, अजर-अमर शिवधाम।
सर्वजयी प्रभु पार्श्व को, करूँ “विनम्र” प्रणाम॥

ॐ ह्रीं कमठकृत जलधारोपसर्गनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षार सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

उल्कापातातिवृष्ट्यनावृष्टि निरोधक

ध्वस्तोर्ध्वकेश विकृताकृति मर्त्यमुण्ड-
प्रालम्बभृद् भय दक्त्र विनिर्यदग्निः।
प्रेतव्रजः प्रति भवन्त-मपीरितो यः,
सोऽस्याभवत् प्रतिभवं भवदुःख हेतुः॥३३॥

अन्वयार्थ

ध्वस्तोर्ध्व केश विकृताकृतिमर्त्यमुण्डप्रालम्बभृद् = इधर -उधर बिखरे हुए तथा ऊपर को उठे हुए विकराल केशों के समूह से विकृत आकृति चिह्नों से ऐसे मनुष्य के मुण्डों की मालाओं को धारण करने वाला और, भयद दक्त्र विनिर्यदग्निः= जिनके भयंकर मुखों से अग्नि निकल रही है ऐसे, यः = जो, प्रेतव्रजः = भूत पिशाचों का समूह, भवन्तं = आपके प्रति, ईरितः = भेजा था, सः = वह प्रेतों का समूह, अपि = भी, अस्य = उस कमठ जीव दैत्य को, प्रतिभवं = भव भव में, भव दुःख हेतुः = संसार दुःख का कारण, अभवत् = हुआ था।

भावार्थ

हे प्रभु! नर कपालों की माला वाले भूत पिशाचों द्वारा उपसर्ग किया, मुख से आग उगली पर वो असुर दैत्य आपको छू भी नहीं पाया। स्वयं अपना संसार बढ़ाया।

अंग्रेजी

O God! You were subjected to misfortunes by the ghosts and vampires wearing the chain made of skulls of men, spitting fire from the mouths, however agitated monsters could not even touch you.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो असणिपातादि वारयाणं सव्वोसहि पत्ताणं।
(अतिवृष्टि अनावृष्टि निवारण हेतु सर्वोषधि ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं वृषभादि तीर्थकरेभ्यो नमः स्वाहा अथवा
ऋ असं असु पसु चंपु शीश्रे वावि अधाशाकु अममुनने पाम।

पद्यानुवाद

दैत्य प्रभु पर दौड़ाए, तप से विचलित हो जाए-2

पर कुछ बिगाड़ न जाए-SS

दृढ़ता और बढ़ी प्रभु की, पापकर्म झड़ते जाए-2

भारी कमठ ने हो-3 फिर दुक्ख उठाए रे-SS

ध्यान समय में कमठ दुष्ट ने, भूतों को दौड़ाया था,
लेकिन कमठ आपको विचलित, कभी नहीं कर पाया था।
उन पिशाच को कर्मबंध हो, हे स्वामिन्! दुख हुए अपार,
भव भव में भोगे तन धरकर, उनका बढ़ा स्वयं संसार॥

धारे नरमुण्डों की माला, बिखरे बाल भयंकर हाला।
भूत-पिशाच डिगाने भेजे, अग्नि निकलती मुँह था काला॥
जिनवर को वे हिला न जाए, खोटे कर्म कमठ पर आए।
भव-भव में दुःख उसे हुआ था, ऐसा सभी शास्त्र बतलाए॥

ॐ ह्रीं कमठकृतपैशाचिकोपद्रव जयनशीलाय क्लीं महाबीजाक्षर संहिताय श्रीपार्वनाथाय अर्घ्यम्।

भूत पिशाच पीड़ा तथा शत्रुभय नाशक

धन्यास्त एव भुवनाधिप! ये त्रिसंध्य-
माराधयन्ति विधिवद्-विधुतान्य कृत्याः।
भक्त्योल्लसत्पुलक पक्षमल देह देशाः,
पादद्वयं तव विभो! भुवि जन्मभाजः॥३४॥

अन्वयार्थ

भुवनाधिप! = हे तीनों लोक के अधिपति भगवन्!, ये= जो, जन्मभाजः = संसारी प्राणी, विधुतान्यकृत्याः = छोड़ दिए हैं अन्य कार्यों को जिन्होंने, भक्त्या = भक्ति से, उल्लसत्पुलक पक्षमलदेह देशाः = प्रकट हुए रोमांच से व्याप्त हैं शरीर के अवयव, विधिवत् = शास्त्रोक्त विधि से, त्रिसंध्यं तव = त्रिकाल में आपके, पादद्वयं = दोनों चरणों की, आराधयन्ति = आराधना करते हैं, विभो = हे भगवन्!, भुवि = पृथ्वी पर, ते = वे, एव = ही, धन्याः = धन्य हैं।

भावार्थ

हे नाथ! सभी भोग विषयों को छोड़कर जो आपकी भक्ति में रोमांचित हो गये हैं जो त्रिकाल वंदना करते हैं वे इंसान धरती पर धन्य हैं।

अंग्रेजी

O Lord! Abandoning all external pleasures those who are delighted and devoted to your worship, pray to you three times are blessed on the earth.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अहं णमो भूतवाहावहारयाणं विट्ठोसहि पत्ताणं।
(भूतबाधा निवारण हेतु विष्णोधि ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ ह्रीं नमो भगवति (ते?) भूत पिशाचराक्षस वेतालान् ताडय ताडय मारय मारय स्वाहा।

पद्यानुवाद

भव के छोड़े काम यहाँ, सुबह शाम प्रभु नाम यहाँ-2
पुलकित हो सर्वांग यहाँ-SSS
तेरी भक्ति रचाते हैं-धन्य वही कहलाते हैं-2
उनका ही जीवन-हो-3 भव सफल बताएँ रे-SS

हे प्रभु! जिनने अन्य काम तज, भक्ती की पुलकित मन होय,
तीनों काल स्तवन करके, भक्तिमयी गंगा तन धोय।
चरण कमल में आराधन कर, हर्षित हृदय बसाते हैं,
धन्य-धन्य वे भविजन भव में, स्वर्ण सम्पदा पाते हैं॥

भक्ति से रोमांचित होकर, मन से खुश हो पुलकित होकर।
भव के जल्पों को तज करके, वन्दन करते तन्मय होकर॥
हे प्रभु तीनों संध्या गाते, गुण आराधन में मन लाते।
त्रिकाल प्रभु का ध्यान लगाते, वे भवि भव में धन्य कहाते॥

ॐ ह्रीं धार्मिकवन्दिताय क्लीं महाबीजाक्षार सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

मृगी उन्मादअपस्मार विनाशक

अस्मिन्-नपार भव वारिनिधौ मुनीश!
मन्ये न मे श्रवण गोचरतां गतोऽसि।
आकर्णिते तु तव गोत्र पवित्र मन्त्रे,
किं वा विपद्-विषधरी सविधं समेति?॥35॥

अन्वयार्थ

मुनीश! = हे मुनीश!, मन्ये अस्मिन् = मैं ऐसा मानता हूँ कि इस, अपार भव वारिनिधौ = अपार संसार समुद्र में आप, न मे श्रवणगोचरतां = मेरे कर्णगोचर नहीं, गतोऽसि = हुये हैं अर्थात् आपका नाम मेरे कर्णगोचर नहीं हुआ क्योंकि, तु = निश्चय से, तव = आपके, गोत्र पवित्र मन्त्रे = नाम रूपी पवित्र मंत्र को, आकर्णिते = सुन लेने पर, विपद् विषधरी = विपद् रूपी नागिन, किं = क्या, सविधं = समीपता को, समेति = प्राप्त हो सकती है अर्थात् नहीं हो सकती।

भावार्थ

हे नाथ! मुझे ऐसा लगता है कि हमने आपकी वाणी ही क्या आपका नाम भी नहीं सुना, अन्यथा संसार की अनेक विपत्तियाँ मेरे पास कैसे आतीं।

अंग्रेजी

Hey Nath! It seems to me as if I have never your voice and name too earlier, otherwise how so much worldly misfortunes befall on me?



ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मिगीरोअवारयाणं मणबलीणं।

(मिरगी रोग निवारण हेतु मनबल ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो भगवती (ते?) मिगियागदे अपस्मारे (मृग्युन्मादापस्मदापस्मरादि?)

रोगे (ग) शांति कुरु कुरु स्वाहा।

पद्यानुवाद

फिरें भटकते वो प्राणी-सुनें न जो जिनवर वाणी-2

जिनवाणी है कल्याणी-55

नाम तुम्हारा जप जाये, उस पर नहीं विपति आये-2

प्रभु का शुभ नाम हो-3 पावनता लाए रे-55

नाम तुम्हारा हे प्रभु! मेरे, कानों में नहीं पड़ा कभी,
पड़ता तो फिर मुझको होते, दुखभारी क्यों यहाँ अभी।
निश्चय से तव नाम मालिका, विषमय नागिन छाती है,
मैंने नाम नहीं सुन पाया, यह दुखधार बताती है॥

जिसने तेरा नाम सुना है, उसने उर में तुम्हें गुना है।
हे प्रभु! सुना नहीं तव नाम, उसको भव में दुःख घना है॥
हमने तुमको सुना नहीं है इसीलिए सुख मिला नहीं है।
नाम तुम्हारा गर सुन लेते, तो फिर गर्दिश कहीं नहीं है॥

ॐ ह्रीं पवित्रनामथेयाय क्लीं महाबीजाक्षार सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।



सर्प वशीकरण

जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव!
मन्ये मया महित-मीहित-दान-दक्षम्।
तेनेह जन्मनि मुनीश! पराभवानां,
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम्॥36॥

अन्वयार्थ

मुनीश! = हे मुनीश्वर!, मन्ये = मैं मानता हूँ कि, मया = मैंने, जन्मान्तरे = भव भवान्तरों में, अपि = भी अर्थात् कभी भी, ईहितदानदक्षं = इच्छित फल को देने में समर्थ ऐसे, तव = आपके, पाद युगं महितं न = चरण कमलों की पूजा नहीं की, देव! = हे देव!, तेन = इसीलिए, अहं = मैं, इह जन्मनि = इस जनम में, मथिताशयानां = हृदय भेदी, पराभवानां = आपदाओं का (तिरस्कारों का), निकेतनं = घर, जातः = हुआ हूँ।

भावार्थ

हे भगवन! मैं ऐसा मानता हूँ कि परभव में इच्छित फल देने वाले आपके चरणों की कभी पूजा नहीं की इसीलिए आज मैं बहुत दुःख उठा रहा हूँ।

अंग्रेजी

Oh Lord! believe that I have never worshipped your desired fulfilling feet earlier, that is why I am facing too much sadness now a days.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बालवसीयरण कुसलाणं वचिबलीणं।
(वशीकरण हेतु वचन बल ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ ह्रीं अष्टमहानाग कुल विष शांति कारिणि (ण्यै?) नमः स्वाहा।

पद्यानुवाद

चरणों में झुक जाते हैं, जो पूजा कर जाते हैं-2
इच्छित फल वो पाते हैं-SS
भाव सहित नहीं पूजन की, इसीलिए हूँ बहुत दुखी-2
प्रभु की पूजन से-हो-3 भव-भव सुख पाये रे-SS
इच्छित फल के दाता पद द्वय, तेरे पूज न पाए हम,
हे प्रभु! ऐसा मान रहा हूँ, वरना क्यों रह जाते गम।
उर भेदी यह तिरस्कार इस भव मैं क्यों हमको मिलता,
अगर पूजता चरण कमल को, तो इस अघ में क्यों जलता॥
ऐसा लगता हमको भगवन्, बहुत गुजारे व्यर्थ हैं जनम।
मन वांछित फल देने वाले, पूजे नहीं पवित्र दो चरण॥
हे प्रभु! तेरे चरण पूजता, तो फिर भव में नहीं डूबता।
संक्लेश परिणाम न होते, आती मुझमें नहीं मूढ़ता॥

जिनवर की पूजन हमें, देती है निर्वाण।

उन प्रभु पारसनाथ को, करूँ “विनम्र” प्रणाम॥

ॐ ह्रीं पूतपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

भूप मिलन तथा सम्मानदायक

नूनं न मोहतिमिरावृत लोचनेन,
पूर्वं विभो सकृदपि प्र-विलोकितोऽसि।
मर्मा विधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः,
प्रोद्यत्प्रबन्ध गतयः कथ-मन्यथैते॥३७॥

अन्वयार्थ

विभो! = हे भगवन्!, नूनं = निश्चय से, मोहतिमिरावृतलोचनेन = मोहरूपी अन्धकार से आच्छादित नेत्र वाले मैंने, पूर्व सकृत् अपि = पूर्व में एक बार भी, न प्रविलोकितोऽसि = अवलोकन नहीं किए गये हो, अन्यथा = नहीं तो यदि एक बार भी आपके भाव विभोर होकर दर्शन कर लेता तो, हि = निश्चय से, प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः = अत्यन्त कर्म बन्ध के कारण वा अति तीव्र पाप कर्म का उदय है जिसमें ऐसे, एते मर्माविधः = ये मर्म भेदक, अनर्थाः = जन्म, जरा, मृत्यु, दुःख, शोक आदि अनर्थ, माम् कथं = मुझको कैसे, विधुरयन्ति = दुःख देते? अर्थात् नहीं देते।

भावार्थ

हे भगवन्! मोहान्धकार में पड़कर एक बार भी आपका वास्तविक दर्शन नहीं किया वरना इतने दुःख, कर्म हमें कैसे सताते।

अंग्रेजी

Oh God! Being caught by the 'darkness of infatuation' I never saw the real you even for a single time, otherwise the sorrowful karmas would not have caused me so many troubles.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वराज पयवसीयरण कुसलाणं कायबलीणं।
(सभी राज्यपद वशीकरण हेतु काय बल ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो भगवति (ते) सर्वराजा प्रजा वश्य (श?) कारिणि (णे?) नमः स्वाहा।

पद्यानुवाद

अंधेपन में दर्श किया, सुख का अमृत नहीं पिया-2
हरदम रहा जिया दुखिया-SSS
सच्चा दर्शन हो जाता, इतने दुख फिर क्यों पाता-2
तेरा ही दर्शन-हो-3 सब दुःख मिटाए रे-SSS

गहन तिमिर मिथ्यात्व उदय से, अवलोकन नहीं तुम्हें किया,
निश्चय से हे स्वामिन्! मेरा मान रहा है स्वयं हिया।
दर्शन होते अगर तुम्हारे, कर्म बन्ध क्यों बढ़ जाता,
बहुत अनर्थों की जड़ दुःख है, उर पर कैसे चढ़ पाता॥

नहीं किया है निश्चय दर्शन, उर से किया न प्रभु अवलोकन।
एक बार यदि कर लेता मैं, इतना होता दुःख क्यों सघन?॥
हे प्रभु! उर से करता दर्शन, उसको सुख मिलता अन्तर्मन।
फिर भव दुःख नहीं हो पाता, ऐसा कहते गुरुजन भगवन्॥

ॐ ह्रीं दर्शनीयाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

असह्य कष्ट निवारक

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन जन बान्धव! दुःखपात्रं,
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भाव शून्याः॥३८॥

अन्वयार्थ

जनबान्धव! = हे जगत् जन के बान्धव! हे भगवन्! मैं, मया = मुझ अज्ञानी ने, आकर्णितः अपि = आपके नाम को सुना भी, महितः अपि = आपकी पूजा भी की है, निरीक्षितोऽपि = आपके दर्शन भी किये हैं परन्तु, नूनं = निश्चय से, भक्त्या चेतसि = भक्तिपूर्वक चित्त में, न = नहीं, विधृतोऽसि = धारण किया है, तेन = इसलिए ही, दुःखपात्रं = दुःखों का पात्र, जातः अस्मि = हुआ हूँ, यस्मात् = क्योंकि, भावशून्या = भाव शून्य, क्रियाः = क्रियायें, न प्रतिफलन्ति = फलदायक नहीं होती हैं।

भावार्थ

हे नाथ! मैंने आपके दर्शन, पूजन किये नाम भी लिया फिर भी मैं दुखी हो रहा हूँ सो ठीक ही है क्योंकि भावहीन क्रियायें सफल नहीं होती।

अंग्रेजी

Oh Lord! visited you, look at you, chanted your name, worshipped you, and yet I'm still sad, so it is rightly said that emotionless actions do not bear success.

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दुस्सहकट्टणिवारयाणं खीरसवीणं।
(असह्य कष्ट निवारण हेतु क्षीरसावी ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ जानवा (जनेवा?) न्यारपाप हारिण्यै भगवत्यै खड्ग गारी देव्यै नमः स्वाहा।

पद्यानुवाद

पूजा, दर्शन ध्यान किया, नाम जपा गुणगान किया-2
फिर भी दुख में रहा जिया-55
भक्ति बिना सब कार्य किये, इसीलिए फल नहीं मिले-2
भावों बिन भक्ति-हो-3 नहीं फलित बताएँ रे-55

दर्शन किया, हमेशा पूजा, नाम सुना दिन में त्रय बार,
नहीं मालुम क्या बात रह गई छूटा पिण्ड नहीं दुखधार।
मुझको लगता है यह भगवन्! आडम्बर मय करते काम,
भक्ति बिना अंधे होकर क्या, क्रिया दूर करती दुखधाम॥

नाम सुना पूजा भी कर ली, दर्शन किये भक्ति भी कर ली।
फिर भी मुझको दुःख हुए हैं, लगता है कुछ गलती कर ली॥
भाव शून्य थीं क्रिया हमारी, इसीलिए नहीं दुःख निवारी।
भक्तिभाव से प्रभु उर धरता, तो मिल जाती सुख फुलवारी॥

ॐ ह्रीं भक्तिहीन जनमाध्याय क्लीं महाबीजाक्षार संहिताय श्रीपाश्र्वनाथाय अर्घ्यम्।

सर्व ज्वर शामक

त्वं नाथ! दुःखि जन वत्सल! हे शरण्य!
कारुण्य पुण्य वसते! वशिनां वरेण्य!
भक्त्या नते मयि महेश! दयां विधाय,
दुःखांकरोद्दलन तत्परतां विधेहि॥३९॥

अन्वयार्थ

नाथ! = हे स्वामिन्!, दुःखिजनवत्सल! = दुखी: जनों के बान्धव!:, हे शरण्य = शरणागत प्रतिपालक!, कारुण्य पुण्य वसते! = हे दया की पवित्र भूमि! वशिनां वरेण्य= जितेन्द्रियों में श्रेष्ठ! महेश! = महेश्वर! भक्त्या = भक्ति पूर्वक, नते = नमस्कार करने वाले, मयि = मुझ पर, दयां = दया को, विधाय = करके, दुःखांकरोद्दलन तत्परतां = दुःखों के अंकुरों का नाश करने में तत्परता, विधेहि = कीजिए।

भावार्थ

हे प्रतिपालक! दुखनाशक! दयाशील! जितेन्द्रिय! तेरे चरणों में विनम्र नमन है मेरे दुखों को शीघ्र नाश करने में शीघ्रता कीजिये।

अंग्रेजी

Oh Mentor! Pain reliever! Compassionate! Winner of the senes! i bow to your feet with reverence and pray you to get me soon relieved of my sorrows.



ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वज्जर संतिकरणाणं सप्पिसवीणं।
(सभी ज्वर शांति हेतु सर्पिसावी ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो भगवते (अमुकस्य) सर्व ज्वर शांति कुरु कुरु स्वाहा॥

पद्यानुवाद

शरणागत प्रतिपालक तुम! करुणामय दुखहारक तुम!-2

मुझ पर दया दिखाओ तुम!-SSS

भक्ति में अति नम्र हुआ, भव से पार कराओ तुम।

जल्दी हे भगवन्! हो-3 दुख दूर भगाओ रे-SSS

हे प्रभु! प्रेमी दुखियों के तुम, शरणागत करुणामय आप,
इन्द्रिय विजयी श्रेष्ठ जिनेश्वर! तुम्हें कौन छू सकता पाप।
हुआ विनम्र तुम्हारी भक्ति, दया करो मेरे भगवान्,
सभी दुखों को शीघ्र नाशकर, मुझको वर दो शिवमय थान॥

हे प्रभु! तुम हो दीनदयाल! शरणागत भवि को प्रतिपाल।
मेरे दुःख के बीज निवारो, जोड़ूँ कर मैं नवाऊँ भाल॥
शरण तुम्हारी है उपकारी, भव्यजनों के दुःख निवारी।
नमन करूँ त्रय योग भक्ति से, दया करो मुझ पर त्रिपुरारी॥

ॐ ह्रीं भक्तजनवत्सलाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।



विषम ज्वर विनाशक

निःसंख्य सार शरणं-शरणं शरण्य-
मासाद्य सादित रिपु प्रथितावदानम्।
त्वत्पाद-पंकजमपि प्रणिधान वन्ध्यो,
वन्ध्योऽस्मि चेद्भुवन पावन हा हतोऽस्मि॥४०॥

अन्वयार्थ

भुवनपावन! = हे तीन लोक को पवित्र करने वाले भगवान्! निःसंख्यसारशरणं = संख्यारहित सार भूत पदार्थों का स्थान, शरणं = सबके रक्षक, शरण्यं = शरणागत के प्रतिपालक, सादितरिपु = कर्म शत्रुओं को जीतने वाले जो भगवान् की शरण में जाते हैं उनके कर्म नष्ट हो जाते हैं, प्रथितावदानं = विख्यात है महिमा जिसकी ऐसे, त्वत्पादपंकजं = आपके चरण कमलों को, आसाद्य अपि = प्राप्त करके भी, प्रणिधानवन्ध्यः आपके गुणों का श्रद्धा भक्ति से चिन्तन नहीं किया इसीलिए, वन्ध्यः अस्मि = निष्फल रहा, मैं अभागा रहा, चेत् = और उससे, हा = खेद के साथ, हतोऽस्मि = मैं नष्ट हुआ जा रहा हूँ।

भावार्थ

हे भगवन्! आपके चरणों को पाकर, दर्शन को पाकर भी मैं अभागा पुण्यहीन, फलहीन, ध्यान सेवा रहित होकर नष्ट हो रहा हूँ ये कर्म हमें दुःख ही दुःख दे रहे हैं।

अंग्रेजी

O God! Approaching your feet, visiting you with devotion and yet i, the unfortunate, in auspicious, fruitless, leaving meditation and service, am deteriorating. These karmas are responsible for my pains.



ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उण्हसीय बाह विणासणाणं महसवीणं।
(विषम ज्वर विनाशन हेतु मधुर सावी ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो भगवते झल्व्यू नमः स्वाहा।

पद्यानुवाद

कर्म सताते जाते हैं, विघ्न डालते जाते हैं-2
जब शुभकर्म रचाते हैं-SS

पावन गुणमय प्रतिपालक, रक्षा करो मेरे रक्षक-2
किस्मत का मारा-प्रभु हमें बचाओ रे-SS

पावन भुवन! सभी प्राणी के त्राता! प्रतिपालक! हो आप,
कर्म शत्रु को नाशन हारे, महाशक्तिमय मेरी जाप।
चरण कमल तेरे द्वय पाकर, नहीं कर रहा हूँ मैं ध्यान,
निष्फल जन्म जा रहा मेरा, बहुत अभागा दुख बदनाम॥

सबके रक्षक सबसे पावन, हैं विख्यात परम महिमावन।
कर्मशत्रु को जिनने जीता, जिन प्रभु की भक्ति मनभावन॥
ऐसे प्रभु चरणों को पाकर, चिंतन गुण का किया न आकर।
निष्फल जीवन मेरा प्रभुवर, रहा अभागा बनकर पामर॥

रक्षक शरण पुनीत हैं पावन-निर्मल धाम।

गुणमय है प्रभु! पार्श्व जिन! तुम्हें “विनम्र” प्रणाम॥

ॐ ह्रीं सौभाग्यदायक पदकमलयुगाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।



अस्त्र शस्त्र विघातक

देवेन्द्र वन्द्य! विदिताखिल वस्तुसार!
संसार तारक! विभो! भुवनाधिनाथ!
त्रायस्व देव! करुणा हृद! मां पुनीहि,
सीदन्तमद्य भयद-व्यसनाम्बु राशेः॥41॥

अन्वयार्थ

देवेन्द्रवन्द्य! = हे देवेन्द्रों के द्वारा पूज्य भगवान्! विदिताखिल वस्तुसार!
= सर्व वस्तु के सार को जान लिया है जिसने, संसारतारक! = हे
संसारतारक जिनेश्वर!, विभो = हे स्वामिन्!, भुवनाधिनाथ = हे
त्रिलोकीनाथ देव! भयद व्यसनाम्बुराशेः = भयंकर दुःखों समुद्र से,
करुणा हृद! = हे करुणा सागर, अद्य = आज, सीदन्तं = दुःखों से
पीड़ित, माम् = मुझको, त्रायस्व देव! = सुरक्षित करो नाथ और, पुनीहि
= पवित्र करो।

भावार्थ

हे प्रभु! भयंकर दुखों के सागर में डूबते हुए मुझे बचाओ और पवित्र करो
आप तो सर्वज्ञाता दया के सागर हो।

अंग्रेजी

O God! Kindly save me from drowning in the sea of
extreme pains and sorrows and purify me. You are
omniscient and the sea of compassion.



ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अहं णमो वप्पलाहकारयाणं अमिय सवीणं।
(अस्त्र-शस्त्र विनाशन हेतु अमृतस्रावी ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो भगवते बंभयारि नमो ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ब्लूं नमः (स्वाहा)।

पद्यानुवाद

भव को जाननहारे तुम! भव से तारण हारे तुम-2
दयासिंधु! गुणसागर तुम-SS
दुखी मुझे भव पार करो, पावन कर उद्धार करो-2
सच्चे तुम साथी हो-3 सब स्वार्थ दिखाएँ रे-SS

इन्द्रों से तुम वन्दनीय प्रभु! तत्त्व रहस्य सभी ज्ञाता,
हे प्रभु! भव में खेवटिया तुम, तीन लोक तुमको गाता।
दया सरोवर! भुवनेश्वर जिन! मेरी तड़पन दूर करो,
मुझे बचाओ दुख सागर से, पावनता को शीघ्र वरो॥

हे जग तारक! नाथ त्रिलोकी! इन्द्रों द्वारा पूज्य हे योगी!
हे सर्वज्ञ! जिनेश्वर! स्वामिन्! वस्तुसार निज आतम भोगी॥
भव दुख से अब मुझे बचाओ, पीड़ित हूँ मम कृपा दिखाओ।
पावन करके करो सुरक्षा, भव से मुझको पार लगाओ॥

ॐ ह्रीं सर्वपदार्थवेदिने क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।



स्त्री संबंधी सर्वरोग नाशक

यद्यस्ति नाथ! भवदङ्घ्रि सरोरुहाणां,
भक्तेः फलं किमपि सन्तत-सञ्चितायाः।
तन्मे त्वदेक शरणस्य शरण्य! भूयाः,
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि॥४२॥

अन्वयार्थ

नाथ! = हे नाथ! त्वदेकशरणस्य मे = तेरी ही है एक शरण जिसको ऐसे मुझे, संततसंचितायाः = निरंतर संचित की हुई, भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां = आपके चरण सरोज की, भक्तेः = भक्ति का यदि, किमपि फलं = कुछ भी फल, अस्ति तत् = है तो, शरणस्य शरण्य! = हे आश्रित के आश्रय दाता भगवन्!, अत्र = इस, भुवने = भव में और, भवान्तरे = भवान्तरों में, अपि = भी, त्वमेव = आप ही, स्वामी = मेरे स्वामी, भूयाः = होवें।

भावार्थ

हे स्वामिन्! आपकी सेवा व भक्ति का फल मुझे मिले तो इस लोक व परलोक में सिर्फ आपकी ही शरण मिले, आप ही मेरे स्वामी हो।

अंग्रेजी

O my Master! If i get the result of my devotion and services to you, its my humble desire to get your shelter only whether in this world or any world, only you are my Master.



ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अहं णमो इत्थिरत्तरोअणासयाणं अक्खीणमहाणसाणं।
(स्त्री रोग निवारणार्थं अक्षीण महानस ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो भगवते स्त्री प्रसूत रोगादि शांति कुरु कुरु स्वाहा।

पद्यानुवाद

जिसको तेरी मिले शरण, उसका मिटता जन्म-मरण-2

भव भयनाशक प्रभू चरण-SSS

तेरे पद हों मम उर में, मेरा हृदय रहे पद में
जन्मों-जन्मों तक हो-3 ये फल मिल जाए रे-SS

हे प्रतिपालक! तीन लोक नृप! आप शरण! हे त्राता! एक,
थुति का फल बस इतना चाहूँ, मिले चरण द्वय हमें हमेशा।
आप हमेशा मेरे हो हम, सेवक तुम पद रहे सदा,
मुक्ति न पा लूँ तब तक भूलो, आप न यह वरदान कदा॥

हे प्रभु! तेरी पूजन करता, प्रतिदिन तेरे गुण को वरता।
प्रतिफल में मैं कुछ नहीं चाहूँ, चाहूँ वह मैं तुमसे कहता॥
भव-भव में तुम स्वामी रहना, मुझको तेरे सेवक बनना।
तुमको मैं आदर्श बनाकर, बनूँ आप सा बस ये कहना॥

ॐ ह्रीं पुण्यबहुजनसेव्याय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्ष्वनाथाय अर्घ्यम्।



बंधन मोचक एवं वैभव वर्धक

इत्थं समाहित धियो विधिवज् जिनेन्द्र!
सान्द्रोल्लसत् पुलक कञ्चु कितांगभागाः।
त्वद्बिम्ब निर्मल मुखाम्बुज बद्ध लक्ष्याः,
ये संस्तवं तव विभो! रचयन्ति भव्याः॥४३॥

अन्वयार्थ

जिनेन्द्र = हे जिनेन्द्र भगवान! ये = जो, भव्याः = भव्यजन, इत्थं = इस प्रकार, समाहितधियः = सावधान बुद्धि वाले, त्वद् बिम्ब निर्मल-मुखाम्बुज बद्धलक्ष्या = आपके बिम्ब के निर्मल मुख कमल के प्रति बाँधा है लक्ष्य जिन्होंने ऐसे, सान्द्रोल्लसत्पुलक कञ्चुकितांगभागाः = अत्यन्त उल्लसित घोर पुलक से व्याप्त है अंग भाग जिनका ऐसे प्राणी, विभो = हे स्वामिन्!, विधिवत् = विधिपूर्वक, तव = आपका, संस्तवं = स्तोत्र, रचयन्ति = रचते हैं।

भावार्थ

हे भगवन! जो भव्यजन, प्रखरबुद्धियुत् उमंगपूर्वक, निर्मल मन से आपका स्तवन रचाते हैं वे चंद्रमा की तरह शोभित होकर, स्वर्गसुखों को भोगकर असीम सुख को प्राप्त कर लेते हैं।

अंग्रेजी

O God! Those devotees with pure heart using their wisdom and intellect enthusiastically eulogize you, they are embellished like the moon and enjoy golden pleasures of life ultimately.



ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बंधमोअगाणं सव्वसिद्धायदणाणं।
(बंधन विमोचन व वैभव वर्धन हेतु सर्व सिद्धायतनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो सिद्धि (द्व?) महासिद्धि (द्ध?) जगत्सिद्धि (द्ध?) त्रैलोक्यसिद्धि सहिताय कारणा
बंधनं मम रोगं छिद छिद स्तम्भय स्तम्भय जुंभय जुंभय मनोवाञ्छित (तं?) सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

पद्यानुवाद

गुण का लक्ष्य बनाते हैं, पुलकित मन कर जाते हैं-2

भव्य सुधी कहलाते हैं-SS

यह स्तोत्र रचाते हैं-धन्य वही बतलाते हैं-2

पुण्य का योग-हो-3 ये योग बनाए रे-SSS

हे जिन! जो भविजन तव भक्ती, शुद्ध चित्त हो करते हैं,
पुलकित मन कर ध्याकर उर से, चेतन में नित धरते हैं।
तेरा मुख नीरज अति सुंदर, देख स्वयं होता कल्याण,
भव्य पढ़े, करि याद चित्त में उनको मिले शुभम् स्थान॥

हे सर्वज्ञ! महान जिनेश्वर! भव्याम्बुज को आप दिवाकर।
महिमा जिनकी अतुल अजूबी, भवि पर खिल जावे गुण गाकर॥
इक टक तुमको देखा जिसने, अपने हृदय समाया उसने।
कण-कण रोमांचित हो उठाता, प्रभु की छवि आती जब उर में॥

ॐ ह्रीं जन्मृत्युनिवारकाय क्लीं महाबीजाक्षार सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।



भक्ति का फल स्वर्ग मोक्षसंपदा

जन नयन-‘कुमुदचन्द्र प्रभास्वराः
स्वर्ग संपदो भुक्त्वा।
ते विगलित-मल निचया
अचिरान् मोक्षं प्रपद्यन्ते॥४४॥

अन्वयार्थ

जननयन कुमुदचन्द्र! = लोक के नयन रूपी कुमुदों को आनन्द देने के लिए चन्द्रमा के समान भगवन्, ते = आपका स्तोत्र रचने वाले, प्रभास्वराः = अनेक प्रकार से दैदीप्यमान भव्य प्राणी, स्वर्गसम्पदः = स्वर्गीय सम्पदा को, भुक्त्वा = भोग करके, विगलितमलनिचयः = अष्ट कर्म रूपी मल समूह को नष्टकर अर्थात् जिनके कर्म रूपी मल समूह नष्ट हो गया है ऐसे, ते = वे, अचिरात् = शीघ्र ही, मोक्षं = मोक्ष को, प्रपद्यन्ते = प्राप्त कर लेते हैं।

भावार्थ

हे भगवन! जो भव्यजन कुमुद रूपी नेत्रों को आनन्द देने वाला आपका यह गुणगान करते हैं, वे स्वर्ग की सम्पदा को भोग कर शीघ्र ही मोक्ष सुख को प्राप्त करते हैं।

अंग्रेजी

Oh God! Those who gentalmens sing this praise of your the prayer give amussment to the real lotus eyes, they get heaven and then also get the pleasure and have salvation too.

ॐ ह्रीं कुमुदचन्द्रयति सेवितपादाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्रीपार्श्वनाथाय अर्घ्यम्।

ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खय सुहदायगस्स वड्डमाणबुद्धिरिसिस्स।
(अक्षय सुख दायक वर्धमान बुद्धि ऋद्धिधारी जिनों को नमस्कार हो)

मंत्र

ॐ नमो धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमः (स्वाहा)।

पद्यानुवाद

गाते हैं स्तोत्र यहाँ, खुशियाँ पाते यहाँ वहाँ-SS
जाते हैं वो जहाँ जहाँ-2
स्वर्ग सुखों को पाते हैं-इक दिन शिवपुर जाते हैं-
गुण को जो गाये-हो-3 सब कर्म मिटाए रे-SSS
सब प्राणी के नेत्र पुष्प के कुमुद-कमल का करें विकास,
शोभा चन्द्र समां है जिनकी, स्वर्ग सम्पदा दे सम वास।
हर्षित मन से इस थुति को उर, धरते प्रतिदिन गाते हैं,
उत्तम भोग स्वर्ग में पाकर, मुक्ति महल को पाते हैं॥
जो भवि भक्ति भाव थुति करते, वे अपवर्ग-स्वर्ग सुख वरते।
अष्ट कर्म की धूल उड़ाकर, अजर-अमर अविरामी बनते॥
कुमुदचन्द्र गुरु ने यह गाया, जिस स्तोत्र में है फरमाया।
नाम रखा कल्याण मंदिर, पार्श्वनाथ जीवन प्रकटाया॥

पार्श्वप्रभु महिमा अगम, शिवसुख के करतार।

उनके चरण “विनम्र” मैं, नमहूँ बारम्बार॥

उपसंहार

पद्यानुवाद गुरु ने हमको सिखाया, आशीष दे खुशदिली हमको बनाया।
उनके चरण हृदय में रखकर नमूँ मैं, होकर विनम्र उर से वंदन करूँ मैं॥
अल्प बुद्धि से लिख दिया, कल्याणों का धाम, गुरु विराग आशीष दो, करूँ विनम्र प्रणाम।
अल्पज्ञान से जो लिखा, शोध पढ़ें श्रीमान्, सरस्वती आशीष दे, करूँ विनम्र प्रणाम॥

कल्याणमन्दिर स्तोत्र पूजा

पूर्व-पीठिका स्रग्धराछन्द

श्रीमद्गीर्वाणसेव्यं प्रवलतरमहा-मोहल्लातिमल्ल।
कान्तं कल्याणनाथं, कठिनशठमनो-जातमत्तेभसिंहम्॥
नत्वा श्रीपार्श्वदेवं, कुमुदविधुकृतो, रम्यकल्याणधाम्।
स्तोत्रस्योच्चैर्विशालं, विधिवदनुपम, पूजनं कथ्यतेऽत्र॥

अनुष्टुप छन्द

पंचवर्णेन चूर्णेन, कर्तव्यं कमलं वरं।
वेदवार्धिकरं वेद्यां, कर्णिकामध्ययं बुधैः॥
धौतवस्त्रधरः प्राज्ञः श्लेष्मादिव्याधिवर्जितः।
बाह्याभ्यन्तर-संशुद्धो, जिनपूजा-विधानवित्॥
गुरोराज्ञां विधायोच्चं, शिरस्या-दरतस्ततः।
पृष्ट्वा सङ्घपतिं पूजा-प्रारम्भः त्रियेतेऽञ्जसा॥
आदौ गन्धकुटीपूजां, विधायामल-वस्तुभिः।
पञ्चानामर्हदादीनां, ततोऽर्चा परमेष्ठिनाम्॥
ततो गत्वा गुरोरग्रे, भारती-मुनि-पूजनं।
कृत्वेलाशुद्धिकार्यं च, क्रमेणागमकोविदैः॥
ततोऽम्लानां च सामग्री, कृत्वा सद्गीः बुधोत्तमः।
पूजनं पार्श्वनाथस्य, कुर्यान्मन्त्र-पुरस्सरम्॥
एतत्पद्यसप्तकं पठित्वा स्वस्तिकस्योपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।

स्थापना (अनुष्टुप छन्द)

प्राणतस्वः समायातं, फणिलाञ्छन-संयुतम्।
वामामातृसुतं पार्श्वं, यजेऽहं तद्गुणाप्तये॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न! श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! मम हृदय अवतर अवतर
संवौषट्! इत्याह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न! श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! मम हृदये तिष्ठ तिष्ठ ठः
ठः। इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न! श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! मम हृदयसमीपे सन्निहितो
भव भव वषट्! इति सन्निधिकरणम्। परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामः।

अष्टकम्

शिखरणि छन्द

वियद्गङ्गासिन्धु-प्रमुखशुचितीर्थाम्बुनिवहैः।
शरच्चन्द्राभासैः, कनकमय-भृङ्गार-निहितैः॥
यजेऽहं पार्श्वेशं, सुरनरखगाधीशमहितं।
चिदानन्दप्राज्ञं, कमठ-रचितोपद्रव-जितम्॥

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाथ जलम्
निर्वपामीति स्वाहा।

स्फुरद्गन्धाहूत-प्रचुर-फणिसंरुद्ध-तरुजैः।
रसैः कर्पूरास्यैर्निविडभवसन्तापहरणैः। यजेऽहं ॥

ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय संसार ताप विनाशनाथ चन्दनम्
निर्वपामीति स्वाहा।

रमानाथमीशं, जितानङ्गपाशम्॥स्तुवे॥
 शतेन्द्रार्च्यपादं, स्फुरदिव्यनादं,
 गणाधीशमाद्यं, लसदेववाद्यम्॥स्तुवे॥
 हरं विश्वनेत्रं, त्रिशुभ्रातपत्रं,
 क्षुधाबह्विनीरं, द्विधासङ्गदूरम्॥स्तुवे॥
 दिशाचेलवन्तं, वरं मुक्तिकान्तं,
 निरस्तारिमोहं, पुरु सौख्यगेहम्
 स्तुवे पार्श्वदेवं, भवाम्भोधिनावं,
 त्रिषड् दोषहीनं, जगत्पूज्यमानम्॥
 जराजन्ममुक्तं, वरार्नदयुक्तं,
 हतक्रोधमानं, कृतज्ञानदानम्॥स्तुवे॥
 अविद्यापहारं, सुविद्यागभीरं,
 स्वयंदीप्तिमूर्तिं, जगत्प्राप्तकीर्तिम्॥स्तुवे॥
 यतिवरवृषचन्द्रं, चित्कलापूर्णचन्द्रं।
 विमलगुणसमृद्धं, नम्रनागामरेन्द्रम्॥
 जिनपतिमहिधारं, दुःखसन्तापहारं।
 भजति नमति सारं, सौख्यसारं लभेत॥
 ॐ ह्रीं कमठोपद्रवजिताय श्रीपार्श्वनाथाय जयमालायेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥
 सर्वजीवदयायुक्तः, सर्वलौकान्तिकार्चितः।
 पार्श्वदेवः श्रियं दद्यात्, नित्यं पूजाविधायिनाम्॥
 ॥ इत्याशीर्वादः॥

(शालिनी छंद)

काशीदेशे वाराणसी-पुरेशो, यो बालत्व प्राप्तवैराग्यभावः।
 देवेन्द्राद्यैः कीर्तितं तं जिनेन्द्र, पूर्णार्घ्येन प्रार्चये वामुखेन॥
 ॐ ह्रीं सर्वगुणसम्पन्नाय क्लीं महाबीजाक्षरसहिताय श्री पार्श्वनाथाय पूर्णार्घ्यम्॥

समुच्चय जयमाल

(मालिनी छंद)

शतमखनुतपादं, शान्तकर्मारिचक्रं,
 शमदमयमगेहं, शङ्करं सिद्धकार्यम्।
 सरसिजदलनेत्रं, सर्वलौकान्तिकार्च्यं,
 सकलगुणनिधानं, संस्तवे पार्श्वदेवम्॥

(वनवासिकाछन्दः अयस श्रीछन्दः अथवा सान्द्रपदछन्दः)

भवजलनिधि-पततामुत्तरणं, देवमनन्तगुणं जनशरणं।
 चिद्रूपं बहुगुणसमुदायं, उत्तमगुणगण-हतभवपाशं॥
 रम्यारम्य-गुणस्तवनीयं, कर्मबन्ध-निर्बन्धमजेयं।
 दुष्टोपद्रव नाशन-वीरं, सुध्येयं, जितमन्मथशूरं॥
 गरिमाक्रोधमहानल-कुशदं, हृदि मृगं महतामतिविशदं।
 कर्मदाहतीव्राग्नि-मतुल्यं, गतपरमात्मपदं गतशल्यं॥
 संसृतिविषहरणामृत-कूपं, पदनतनाग-नरामर-भूपं।
 तुङ्गाशोक-महीरुह-सरितं, तद्गमदवष्टितं सुरमहितं॥
 योजनमितदिव्यध्वनिसुनदं, सुरचामर-वीज्यं हतविपदं।
 पीठत्रय-नायकमघमथनं, हरितविभावलय गुणसदनं॥
 दानवारिदुन्दुभि-सदध्वानं, श्वेतातपवारण-गुणमानं।
 मणिहेमार्जुन-शालत्रितयं, पदनतभक्त-जनावनसुदयं॥

पृष्ठलग्न-जनतारण-दक्षं, विस्मयनीयं हतमदकक्षं।
हतकमठोत्थापित-बहुधूलिं, जित मुसलोपम-जलधारालिं॥
हतपेशाचिक विप्लवजालं, नतधर्मिष्ठजनं गुणमालं।
पूतनामधेय शिवभाजं, वरपवित्रपादं जिनराजं॥
दर्शनीयमपहत घनपापं, भक्तिहीन-भविमध्यमरूपं।
भक्तिनम्रजन-वत्सलवन्तं, भूरिभाग्य-दायकमरिहन्तं॥
लोकलोक पदार्थविवेद्यं, पदनतसुकृति-जनरंभिवन्द्यं।
जन्मजरा-मरणच्युतदेवं, 'कुमुदचन्द्र' यतिकृतपदसेवम्॥

(धत्ता)

विश्वादिसेनान्वयव्योमतिग्मं, सद्भव्यवारांनिधिधर्मचन्द्रं।

देवेन्द्र सत्कीर्तित-पादयुग्मं, श्रीपार्श्वनाथप्रणमामिभक्त्या॥

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अहं क्रूरकमठोपद्रवजिनाय श्रीपार्श्वनाथाय समुच्य जयमालायेर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा॥

शार्दूल विक्रीडित छंद

यः प्राग्विप्र इभोऽनु द्वादशदिवि, स्वर्गीं ततः खेचरः।
पश्चादच्युतकल्पजो निधिपतिः, गैवेयके मध्यमे॥
इन्द्रोऽभूत्तत ईशतां शुभवचः, आनन्दनामानते।
ग्रीर्वाणस्तत उग्रवंशतिलकः पार्श्वट् स वो रक्षातत्॥
॥इत्याशीर्वादः, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

(अनुष्टुप छंद)

गुणे वेदाङ्गचन्द्राब्दे शाके फाल्गुनमासके।
कारंजाख्यपुरे नूनं, पूजेयं सुविनिर्मिता॥

इति श्रीबलात्कार-गच्छीयभट्टारकेन श्री महेवेन्द्रकीर्तिना विरचिता।

॥ कल्याणमंदिर पूजा समाप्ता ॥

श्री बज्रपंजर रक्षा कवच

मन्त्र स्तोत्र

परमेष्ठि नमस्कारं सारं नव पदात्मकम्।
आत्मरक्षाकरं वज्रपंजराख्यं स्मराम्यहम्॥1॥
ॐ नमो अरिहंताणं शिरस्कन्धर संस्थितम्।
ॐ नमो सिद्धाणं मुखे मुख पटावरम्॥2॥
ॐ नमो आयरियाणं अंग रक्षति साधिनाम्।
ॐ नमो उवज्झायाणं आयुधेहस्तयोर्द्वयोः॥3॥
ॐ नमो लोए सब्बसाहूणं मोचके पादयोः शुभे।
एसो पंच नमोकारो शिला वज्रमयस्तले॥4॥
सध्वपावप्पणासणो वज्रो वज्रमयो वहिः।
मंगलाणं च सब्बेसिं खादिरांगार खातिकाम्॥5॥
स्वाहान्तं च पद्मज्ञेयं पढमं हवइमंगलम्।
वप्पोपरिवज्रमयं पिधानं देहरक्षणम्॥6॥
महाप्रभाव रक्षेयं क्षुद्रोपद्रव नाशिनि
परमेष्ठि पदोद्भूता कथिता पूर्व सूरिभिः॥7॥
यश्चैना कुरुते रक्षां परमेष्ठि पदैः सदा
तस्य नस्याद्भयं व्याधिराधिश्चापि कदाचनम्॥8॥

फल- इस रक्षा कवच को सुबह एक बार पढ़ने पर यह कवच दिन भर के लिये रोग, शोक, आधि
व्याधि, चिन्ता अकस्मात घटना से शरीर की रक्षा करता है। किसी मुसीबत में फंस जाने पर बार-बार इस
कवच को पढ़ने पर, शीघ्र ही मुसीबत से छुटकारा मिल जाता है।

नोट : रक्षा कवच में मंत्रों के साथ जिन अंगों को रक्षित करने का संकेत है, स्तोत्र पढ़ते हुए उन अंगों का स्पर्श करें

अथ नवग्रह शांति स्तोत्र

आचार्य भद्रबाहु विरचित

जगद्गुरुं नमस्कृत्यं, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितं ।
ग्रहशांतिं प्रवक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे ॥
जिनेन्द्राः खेचरा ज्ञेया, पूजनीया विधिक्रमात् ।
पुष्पैर्विलेपने धूर्त्तैर्नेत्रेभ्योऽस्तुष्टिहेतवे ।
पद्मप्रभस्य मार्तण्डश्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च ।
वासुपूज्यस्य भूपूत्रो बुधश्चाष्टजिनेश्वरः ॥
विमलानन्तधर्मेश-शांति कुन्धवरहन्मि ।
वर्द्धमानजिनेन्द्राणां, पादपद्मं बुधो नमेत् ॥
ऋषभाजितसुपाशर्वाः चाभिनन्दनशीतलौ ।
सुमतिः सम्भवस्वामी, श्रेयांसेषु बृहस्पति ॥
सुवुधिः कथितः शुक्रः सुव्रतश्च शनैश्चरः ।
नेमीनाथो भवेद्रोहोः केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥
जन्मलग्नं च राशिं च, यदि पीडयन्ति खेचराः ।
तदा संपूजयेद् धीमान-खेचरान् सह तान् जिनान् ॥
आदित्यसोममंगल, बुधगुरुशुक्रशनिश्चरो ।
राहुकेतु मेखाग्रे या, निजपूजाविधायकः ॥
जिना नामोग्रः तयोहि, ग्रहाणां, तुष्टिहेतवे ।
नमस्कारशतं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतं ॥
भद्रबाहुगुरुर्वाग्मी, पंचमः श्रुतकेवली ।
विद्याऽनुवादतः पूर्वं ग्रहशांतिविधिः कृता ।
यः पठेत् प्रातरुत्थाय, शुचिर्भूत्वा समहितः ।
विपत्तितोभवेच्छांतिः क्षेमं तस्य पदे पदे ॥

प्रातःकाल इस स्तोत्र का पाठ करने से क्रूरग्रह अपना असर नहीं करते । किसी ग्रह के असर होने पर 27 दिन तक प्रतिदिन 21 बार पाठ करें से अवश्य शांति होगी ।

उपसगगहर-स्तोत्र

पाठ करने के पूर्व सात बार बोलें

“श्रीभद्रबाहुप्रसादात् एष योगः फलतु”

उपसगगहरं पासं पासं वंदामि कम्मघण-मुक्कं ।
विसहर-विस णिण्णासं, मंगल-कल्याण-आवासं ॥1॥
विसहर-फुलिंगमंतं कंठे धारेदि जो सया मणुवो ।
तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ जरा जति उवसामं ॥2॥
चिट्ठदु दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होदी ।
णर-तिरियेसु वि जीवा, पावति ण दुक्ख-दोगच्चं ॥3॥
तुह सम्मते लद्धे, चिन्तामणि-कप्पपायवम्भिए ।
पावति अवग्घिणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥4॥
इह संथुदो महायस! भत्तिब्भर णिब्भरेण हिदयेण ।
ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पासजिणचंदं ॥5॥
ॐ अमरतरु-कामधेणु-चिन्तामणि-कामकुंभमादिया ।
सिरि-पासणाह-सेवागहणे सव्वे वि दासत्तं ॥6॥
उपसगगहरं त्थोत्तं, कादूणं जेण संघकल्लाणं ।
करुणायरेण विहिदं, स भद्रबाहु गुरु जयदु ॥7॥

जिन व्यक्तियों की कुण्डली में कालसर्प योग हो उन्हें उपसगगहर स्तोत्र का पाठ प्रतिदिन करना चाहिए यह इस दोष को शान्त कर जीवन में आशातीत सफलता दिलाता है जैन-जैनतर ग्रन्थों में भी इसकी महत्ता है ।

❀ श्री सरस्वती नाम स्तोत्र ❀

सरस्वत्याः प्रसादेन कार्यं कुर्वन्तु मानवाः ।
तस्मान्निश्चलभावेन पूजनीया सरस्वती॥१॥

श्री सर्वज्ञ मुखोत्पन्ना, भारती बहुभाषिणी ।
अज्ञानतिमिरं हन्ति, विद्या बहु विकासिनी॥२॥

सरस्वती मया दृष्टा, दिव्या कमल लोचना ।
हंस स्कंध समारूढा, वीणा पुस्तक धारिणी॥३॥

प्रथमं भारती नाम, द्वितीयं च सरस्वती ।
तृतीयं शारदा देवी चतुर्थं हंसगामिनी॥४॥

पंचमं विदुषी माता, षष्ठं वाणीश्वरी तथा ।
कुमारी सप्तमं प्रोक्तं, अष्टमं ब्रह्मचरिणी॥५॥

नवमं च जगन्माता दशमं ब्रह्मिणी तथा ।
एकादशं तु ब्रह्माणी, द्वादशं वरदा भवेत्॥६॥

वाणी त्रयोदशं नाम, भाषा चैव, चतुर्दशम् ।
पंचदशं च श्रुतदेवी षोडशं गौर्निगद्यते॥७॥

एतानि श्रुतनामानि, प्रात रूत्थाय यः पठेत् ।
तस्य संतुष्यति माता, शारदा वरदा भवेत्॥८॥

सरस्वती नमस्तुभ्यं वरदे काम रूपिणी ।
विद्यारंभं करिष्यामि, सिद्धिर्भवतु मे सदा॥९॥

श्रावकों हेतु नित्य षटरसी

रविवार को नमक, सोमवार को हरी, मंगलवार को मीठा,
बुधवार को घी, गुरुवार को दूध, शुक्रवार को दही और
शनिवार को तेल का त्याग करना चाहिए ।

कालसर्प योग का प्रभाव

-श्रमण मुनि विज्ञासागर

जब राहु-केतु के बीच में सभी ग्रह आ जाते हैं तो कालसर्प योग बनता है। वैसे राहु का जन्म भरणी नक्षत्र में हुआ, जिसका देवता काल है और केतु का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में हुआ, जिसका देवता सर्प है, अतः इन दोनों देवताओं के मिलने से जिसकी कुण्डली में कालसर्प योग होता है उसे अपने जीवन में काफी संघर्ष करना पड़ता है, इच्छित और प्राप्त होने वाली प्रगति में रुकावटें आती हैं, बहुत विलम्ब से यश प्राप्त होता है। मानसिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक और व्यापारिक दृष्टि से व्यक्ति परेशान रहता है क्योंकि जातक के भाग्य को राहु-केतु अवरुद्ध करते हैं, जिसके कारण जातक की उन्नति नहीं होती है। उसे अपनी जीवन चर्या चलाना मुश्किल हो जाता है और अनेक प्रकार के दुःख भोगने पड़ते हैं।

कालसर्प योग के प्रकार

1. **अनंत कालसर्प योग**-लग्न में व सातवें भाव में राहु हो तो यह योग होता है। इस योग में जन्मा हुआ बालक आगे गृहस्थ सुख एवं शरीर सुख नहीं भोग सकता।
2. **कुलिक कालसर्प योग**-दूसरे एवम् आठवें घर में राहु-केतु ग्रह हो तो यह योग होता है। इस योग में जन्मा हुआ बालक धनहीन होगा, आयु कम रहेगी एवम् शरीर से निर्बल रहता है।
3. **वासुकी कालसर्प योग**-तीसरे व नौवें भाव में राहु-केतु ग्रह हो बंधुओं से निराशा रहती है, मुकद्दमे-केस लड़ने पड़ते हैं।
4. **शंखपाल कालसर्प योग**-चौथे व दसवें भाव में राहु-केतु ग्रह हो तो यह योग बनता है। इस योग से वाहन हानि, धनहानि, विदेश योग में रुकावट, मन दुःखी रहता है।

5. **पद्म कालसर्प योग**—पाँचवें व ग्यारहवें भाव में राहु—केतु ग्रह होने से यह योग बनता है। इस योग से पढ़ाई में रुकावट आती है, संतान से दुःखी रहते हैं, खर्च ज्यादा, लाभ कम होता है।
6. **नाभकालसर्प योग**—सातवें से लग्न तक सारे ग्रह होने से यह योग बनता है। इस योग से स्वयं का वैवाहिक जीवन बिगड़ जाता है। वनवास भोगना पड़ता है।
7. **कर्कोटक कालसर्प योग**—आठवें से दूसरे तक सारे ग्रह होने से बनता है। इस योग से शरीर में बीमारी होती है, सूखी पीड़ा रहती है, पैसे की कमी आती है, कर्जा बढ़ जाता है।
8. **शंखनाद कालसर्प योग**—नौवें से तीसरे भाव तक सारे ग्रह होने से योग बनता है। इस योग से दरिद्री जीवन निभाना पड़ता है। जगह—जगह अपमान होता रहता है, पद त्याग करना पड़ता है।
9. **पातक कालसर्प योग**—दसवें से चौथे भाव तक सारे ग्रह आने से यह योग बनता है। धर्म छोड़कर पैसा कमाता रहता है। कलंकित जीवन भोगना पड़ता है।
10. **विषाक्त कालसर्प योग**—ग्यारहवें से पाँचवें भाव तक सारे ग्रह आ जाने से पति—पत्नी में तनाव रहता है, घर से निकल जाने के भाव होते हैं और सरकार से दण्डित होना पड़ता है।

कालसर्प योग निवारण करने का उपाय

कालसर्प योग निवारण के लिए अनेक धर्मों के ग्रंथों में कई प्रकार की किंवदंतियाँ मिलती हैं। परंतु विचार किया जाये तो उन सब में सत्यता एवं समीचीनता कम मिलती है। अधिकतर टोने—टोटके, अंधविश्वास जैसे ही लगते हैं। कोई कहता है कि लोहे का सर्प शिव पर चढ़ाना है या तांबे का सर्प चढ़ाना

सोने—चाँदी के सर्प चढ़ाना अथवा ब्राह्मण को दान करना बताते हैं। कोई नदी में सर्प—सर्पिणी को जोड़ा प्रवाहित करना बताते हैं तो कोई राहु—केतु का जाप या शिवमंत्र का जाप करना आदि—आदि बताते हैं। संसारी प्राणी इन से संतुष्ट होकर कर्म चपेट में आकर इतना घबरा जाता है और अज्ञानवश उस दुःख से छूटने के लिए ऐसी—ऐसी जगह भटकता है कि जिससे मिथ्यात्व से भ्रमित हो जाता है। इस मिथ्यात्व से दूर होने हेतु भक्तामर स्तोत्र के समान यह 'कल्याण मन्दिर स्तोत्र' जो कि कल्याण का ही मंदिर है, जो इसकी शरण जायेगा, आराधना करेगा, वह निश्चित ही शाश्वत सुख को पायेगा।

दैविक अतिशय एवं फल प्राप्ति की अपेक्षा से भी कल्याण मंदिर स्तोत्र—पूजा अन्य प्रसिद्ध प्रचलित स्तोत्रों की तुलना में कितना अधिक चमत्कारपूर्ण है, इसको इतिहास की वह घटना ही स्पष्ट कर देती है कि जिसके द्वारा इस स्तोत्र के सम्मानीय रचयिता श्री कुमुदचन्द्राचार्य श्री जी ने ओंकारेश्वर के शिवलिंग से भी 1008 भगवान पार्श्वनाथ स्वामी का सौम्य प्रतिबिम्ब अपार जनता के समक्ष प्रकट कर विक्रमादित्य जैसे कट्टर शैव सम्राट् का मस्तक नम्रीभूत कर दिया एवं जैन धर्म की अपूर्व प्रभावना की। अतः इस स्तोत्र—पूजा—विधान का एक ही सार है, संसार के असह्य कष्टों का निवारण। विविध उपद्रवों का नाश करने वाला, पापनाशक एवं दुःखनाशक है। बस इसके लिए आपकी अटूट श्रद्धा—भक्ति चाहिये। जो भक्ति करेगा वह शाश्वत् सुख पायेगा।

साभार – कल्याण मंदिर स्तोत्र पूजा
श्री सिद्धान्त तीर्थ क्षेत्र, शिकोहपुर, गुरुग्राम)

भजन

जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाये रे-SSS
होनी अनहोनी-ही-3 कब क्या घट जाये रे-SSS
जिसको तुमने पाला है, कहते हो मम लाला है-2

वह ही तुमको हाला है-SS

इक दिन वो ही आयेगा, अर्थाँ तेरी बनाएगा
तेरा ही बेटा-हो-3, तुझमें आग लगाये रे-SS

जीवन है...

आज नहीं कल जाना है, क्यों इससे अंजाना है-2
किसका कौन ठिकाना है-SS

कब तक प्राण गँवाओगे, खुद को यहाँ भुलाओगे-2
दुनियाँ के काँटे-हो-3, चुभकर दर्द बढ़ाएँ रे-SS

जीवन है...

धरा-धरा पर सारा धन, धन में धरा तुम्हारा मन-2
भूल गया अपनी चेतन

धन कोहराम मचाता है, दुनियाँ में भटकाता है-2
अपना धन पाये-हो-3, वो धन्य कहाये रे-SS

जीवन है...

खुद की नहीं तलाश यहाँ, तो हम जिन्दा लाश यहाँ-2
ऐसा हो एहसास यहाँ-SS

मजहब की हो प्यास यहाँ, हरदम ऐसा प्रयास यहाँ-2
तब ही जीवन में हो-3, निजसार दिखाए रे-SS

जीवन है...

सोच रहा अपना बेटा, करे बुढ़ापे में सेवा-2
खाता ख्वाबों की मेवा-SS

तन बूढ़ा हो जाता है- बेटा पास न आता है-2
तेरे ही परिजन हो-3 तुझको कफन उढ़ाए रे-SS

जीवन है...

भजन

गुरु चरणों की धूलि हमें जब मिल जाये रे-SS
उसकी दुनियाँ में हो-3 किस्मत खुल जाये रे-SS
गुरु ब्रह्मा गुरु शंकर हैं-गुरुवर ही तीर्थकर हैं-2

तन से परम दिगम्बर हैं-SS

गुरुवर हैं जैसे दिनकर, सभी प्राणियों को हितकर-2
गुरु की कृपा से हो-3 हम मौज उड़ाएँ रे-SS

गुरु चरणों...

गुरु के बिना अधूरा है-माटी जैसा चूरा है-2
जीवन लगता कूड़ा है-SS

गुरु जीवंत सितारे हैं, मंजिल गुरु हमारे हैं-2
गुरु की आज्ञा में हो-3 सब वेद समाए रे-SS

गुरु चरणों...

गुरु की जिसे इनायत हो, उसकी सदा हिफाजत हो-2
गम में उसे किफायत हो-SS

गुरु चरणों में जन्नत है, गुरु से जीवन उन्नत है-2
गुरुवर से बढ़कर हो-3 नहीं कोइ दिखाए रे-SS

गुरु चरणों...

गुरु गुणमय रत्नाकर हैं, गुरुवर, ज्योति दिवाकर हैं-2
गुरु गंगाजल सागर हैं-SS

गुरु ही मुझे प्रधान हैं, गुरुवर ही भगवान हैं-2
गुरु की मूरत में हो-3 भगवान् दिखाए रे-SS

गुरु चरणों...

गुरुवर का जब प्यार मिले, जीने का आधार मिले-2
ये सारा संसार मिटे-SS

गुरु मंजिल के साधक हैं-आराधन आराधक हैं-2
गुरु की अनुकंपा हो-3 भवपार लगाये रे-SS

गुरु चरणों...

भजन

कर तू आतम ध्यान बाबा कर तू आतम ध्यान।
अंतस् में भगवान बाबा अंतस् में भगवान।
अगर बाँटने पर बढ़ जाये समझो वही हमारा है।
देने पर जो घटता जाये समझ वही अँधियारा है।
जान सके वह ज्ञान बाबा जान सके यह ज्ञान
कर तू...

घर में सुख क्यों मान रहा है यही तुझे ठुकरायेगा।
धन में जीवन गँवा रहा तू साथ न धेला जायेगा।।
क्यों बनता नादान बाबा क्यों बनता नादान
कर तू...

मालिक होकर बना भिखारी यही मोह अज्ञान कहा।
वीतरागता समझ न पाया सभी जगह अपमान सहा।
खुद को तू पहिचान बाबा खुद को तू पहिचान
कर तू...

मैं हूँ पर से भिन्न नियाला शुद्ध बुद्ध अभिरामी हूँ।
चिदस्वरूप हूँ समयसार मैं ज्ञानानंद स्वभावी हूँ।
ऐसा खुद को जान बाबा ऐसा खुद को जान
कर तू...

संत समागम संयम पाकर मरण समाधि पाना है
जग का सब जंजाल छोड़कर अपने घर में आना है
छोड़ सभी अज्ञान बाबा छोड़ सभी अज्ञान
कर तू...

अग्नि में पड़कर भी चेतन कभी नहीं जल पाया है।
तलवारों से कटकर चेतन कभी नहीं कट पाया है।
भीतर शक्ति महान् बाबा भीतर शक्ति महान्
कर तू...

भजन

धीरे धीरे चलो जी मन्दिर, भगवन के गुणगाने को।
बढ़ते चलो हजारों लोगो, वीतरागता पाने को॥टेक॥

घर से मेर भव बने मैं, मन्दिर जी में जाऊँगा-2
शांतिनाथ के दर्शन करके, मन ही मन हर्षाऊँगा-2
पार्श्वनाथ के दर्शन करता-2, पाप अनन्त मिटाने को॥
बढ़ते चलो...

भक्ति भाव से दर्शन करके, कूप से जल भर लाऊँगा-2
दोनों हाथ में कलश को लेकर, भगवन को नहलाऊँगा-2
ऐसा भव्य जीव ही करते-2 अपने दुःख मिटाने को ॥2॥
बढ़ते चलो...

थाल में अष्ट दरब को लेकर, पूजन विधि को रचाऊँगा-2
भगवन के गुण पाने को मैं, पूजन में गुण गाऊँगा-2
देव-शास्त्र-गुरु पूजन करता-2 रत्नत्रय गुण पाने को ॥3॥
बढ़ते चलो...

हे प्रभु! आप तो केवलज्ञानी, तीनों लोक विजेता हो-2
हे प्रभु! आप तो सिद्ध स्वरूपी, मुक्तिपथ के नेता हो-2
मेरा मुझसे मिलन करा दो, मंजिल अपनी पाने को ॥4॥
बढ़ते चलो...

हे प्रभु! चरण कमल दृय तेरे, मेरे हृदय रहें पल-पल-2
मुक्ति न पातूँ तब तक भगवन् कर दूँ नाश करम दल-मल-2
सम्यक् बोध खिला दो उर में, मरण समाधि पाने को ॥5॥
बढ़ते चलो...

(गुरुदेव का भक्तिभरा गीत) प्रथम रचना-1990

भजन

मैं चंदन बनकर तेरे चरणों में लग जाऊँ-SSS
मैं फूल बनकर तेरे चरणों में चढ़ जाऊँ-SSS

तेरा दर्शन सबसे न्यारा, भव्य जनों को लगता प्यारा
तूने सबको पार उतारा, तेरा हमको एक सहारा
मैं दिल में तुझे बिठाकर-2 तेरे ही गुण गाऊँ-SSS

मैं चंदन...

तेरी भक्ति है सुखदाई, दुःख में तू ही एक सहाई...
भव्यजनों ने दिल से गाई, उसने सारी दौलत पाई
मैं सारे पाप हटाकर-2 तुझमें ही रम जाऊँ-SSS

मैं चंदन...

तू मिलता तो सब मिल जाता, तेरे गुण को कौन न गाता
वो ही तेरा भक्त कहाता, सेवा करने रोज जो आता
मैं पूजन करके तेरी-2 सब अर्पण कर जाऊँ-SSS

मैं चंदन...

जो खुद से ही प्रेम करेगा, वो मंजिल को प्राप्त करेगा
खुद में तेरा ध्यान करेगा वो तेरा आशीष वरेगा
मैं मरण समाधि करके-2 अपने गुण पा जाऊँ-SSS

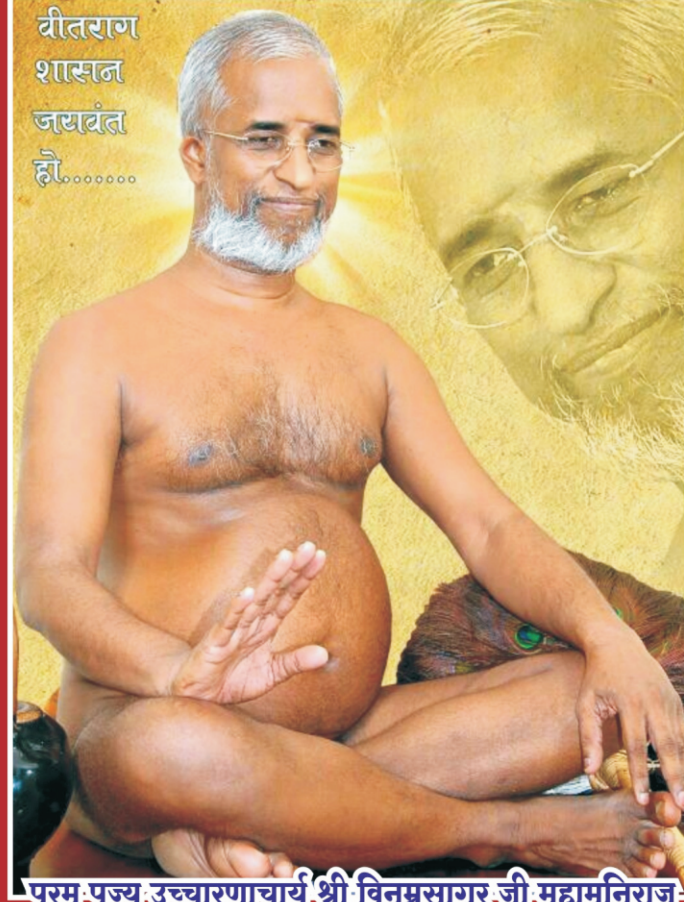
मैं चंदन...

तेरे दर पर आये सवाली, उसकी भरती झोली खाली
महिमा तेरी अजब निराली, भक्ति तेरी है गुणवाली
मैं गीत तुम्हारे गाकर-2 तुम जेसा बन जाऊँ-SSS

मैं चंदन...

"As food so mood"

वीतराग
शास्त्र
जयवंत
हो.....



परम पूज्य उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज